बाल-विज्ञान
(नैतिक शिक्षा भाग 3)

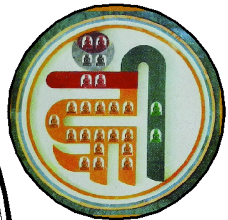

: लेखक :-

प.पू. विश्वहितैषी, राष्ट्रसंत, गणाचार्य, युगप्रमुख श्रमणाचार्य,

श्री108 डॉ. विरागसागरजी महाराज

-: प्रकाशक :-

श्री सम्यग्ज्ञान दिगम्बर जैन विराग विद्यापीठ

जैन कीर्तिस्तम्भ, बस स्टैण्ड रोड, भिण्ड (म.प्र.)

प्रसंग : परम पूज्य युगप्रमुख श्रमणाचार्य, राष्ट्रसंत, गणाचार्य श्री 108 डॉ. विरागसागरजी महाराज के ''राष्ट्रीय रजत आचार्य पदारोहण महोत्सव'' वर्ष 2016-2017 के सुअवसर पर

कृति : **बाल-विज्ञान भाग 3**

लेखक : परम पूज्य युगप्रमुख श्रमणाचार्य, गणाचार्य
श्री 108 डॉ. विरागसागरजी महाराज

संस्करण : 2016

प्रतियाँ : 1000

पुण्यार्जक : श्रीमान् कमलचन्दजी-श्रीमती सुरजदेवी जैन
दीपक, आनन्द, लोहारिया (राज.)

मूल्य : 25.00

प्राप्ति स्थान :
1. श्री सम्यग्ज्ञान दिगम्बर जैन विराग विद्यापीठ
चैत्यालय मंदिर, बताशा बाजार, भिण्ड (म.प्र.)
संपर्क सूत्र-पं. वीरेन्द्र जैन, मो. 9754803220
2. आचार्य श्री विरागसागर विद्यापीठ (बी.एड. कॉलेज)
पुष्प विहार कॉलौनी, बीना- 470113,
जिला- सागर (म.प्र.) मो. 9425135816
3. विराग फाउण्डेशन
सी/ओ, श्री अरुण कोटडिया, 11-ए. विक्रम नगर सोसायटी, उस्मानपुरा, अहमदाबाद- 380013 (गुज.) मो. 9825900124
4. श्री भूपेन्द्र शांतिलाल शाह
13, वृंदावन सोसायटी, डेरी रोड, मेहसाना-2 (गुज.) मो. 9898494914, 9829452020
5. विराग महिला मंच, बोरीवली, मुंबई (महा.)
6. पुष्पा जी, जयपुर (राज.)
7. तिलोक प्रिंटिंग प्रेस, बीकानेर
8. पंकज जैन, विराग युवा मंच, इन्दौर (म.प्र.)

मुद्रक : तिलोक प्रिंटिंग प्रेस, बीकानेर मो. 9314962474/75

जीवन की महत्त्वपूर्ण झांकियाँ

परम पूज्य गणाचार्य 108 श्री विरागसागरजी महाराज

पूर्व नाम	:	अरविन्द जैन (टिन्नू)
जन्म	:	2 मई, 1963, गुरुवार (वैशाख शुक्ला 9, संवत् 2020, पथरिया)
माता-पिता	:	श्रीमती श्यामादेवी जैन (समाधिस्थ पू. श्रमणी आर्यिका विशांतश्री माताजी) ब्र.श्री कपूरचन्दजी जैन (संघस्थ पू.क्षुल्लक श्री 105 विश्ववंद्य सागर जी महाराज)
बहिन	:	श्रीमती मीना जैन, श्रीमती विमला जैन
भाई	:	श्री विजयकुमार, श्री सुरेन्द्रकुमार, बा.ब्र. श्री नरेन्द्र भैयाजी
लौकिक शिक्षा	:	इण्टर मध्यमा (पथरिया, श्री शांति निकेतन, दि.जैन संस्कृत विद्यालय, कटनी, म.प्र.)
क्षुल्लक दीक्षा	:	20 फरवरी, 1980 (फाल्गुन शु. 5 सं. 2036 बुद्धार, शहडोल म.प्र.)
नामकरण	:	पूज्य क्षु. श्री 105 पूर्णसागरजी महाराज
क्षु. दीक्षा गुरु	:	प.पू. तपस्वी सम्राट आचार्य श्री 108 सन्मतिसागर जी महा.
मुनि दीक्षा	:	9 दिसम्बर, 1983 (मगसर शु. 5 वि.सं. 2040), औरंगाबाद (महा.)
मुनि दीक्षा गुरु	:	प.पू.निमित्तज्ञानी आचार्य श्री 108 विमलसागरजी महाराज
आचार्य पद	:	8 नवम्बर, 1992 (का. शु. 13वि.सं. 2049) रविवार, द्रोणगिरी
संयमी सृजन	:	आचार्य-8, मुनि - 70, गणिनी आर्यिका-4, आर्यिका-64, ऐलक-5, क्षुल्लक -29, क्षुल्लिका- 23 कुल - 203
प्रशिष्य	:	100 से अधिक
समाधि सल्लेखनाएँ	:	लगभग 85 एवं अनेक तिर्यंच प्राणी
चातुर्मास	:	1980 से 2016 तक क्रमशः दुर्ग (छत्तीसगढ़), नागपुर (महाराष्ट्र), कारंजा लाड (महाराष्ट्र), कारंजालाड (महाराष्ट्र), नागपुर (महाराष्ट्र), भावनगर (गुजरात), पाँचवा (राज.), निमाज (राज.), जयपुर (राज.), भिण्ड (म.प्र.), भिण्ड (म.प्र.), टीकमगढ़ (म.प्र.), श्रेयांसगिरि (म.प्र.), द्रोणगिरि (म.प्र.), श्रेयांसगिरि (म.प्र.), बीना (म.प्र.), ललितपुर (म.प्र.), मढ़ियाजी (जबलपुर), भिण्ड (म.प्र.), भिण्ड (म.प्र.), भिण्ड (म.प्र.), शिखरजी (झारखण्ड), गया (बिहार), श्रेयांसगिरि (म.प्र.), भिलाई (छत्तीसगढ़), कारंजालाड (महा.) मूडबिद्री (कर्नाटक), मेलचित्तामूर (तमिलनाडू), उद्गांव

(महा.), मुम्बई (महा.), गाँधीनगर (गुजरात), लोहारिया (राज.), अजमेर (राज.), जयपुर (राज.), इन्दौर (म.प्र.), श्रेयांसगिरी (म.प्र.), पथरिया (म.प्र.), भिण्ड (म.प्र.)।

साहित्य सृजन : 1. बारसाणुवेक्खा ग्रन्थ पर 1100 पृष्ठीय ''सर्वोदया'' संस्कृत टीका, 2. रयणसार ग्रन्थ पर 1500 पृष्ठीय ''रत्नत्रयवर्धिनी'' संस्कृत टीका, श्रमण संबोधनी टीका लेखन जारी है, 3. अनेक शोधात्मक, चिन्तनशील, बालकोपयोगी कथा, अनुवाद, गद्य, संपादित साहित्य, जीवनी एवं प्रवचन साहित्य 150 से अधिक ग्रंथ।

पंचकल्याणक : लघु वृहद् मिलाकर–67

उपाधियाँ : डॉक्ट्रेट आदि 44 से अधिक

सिद्धांत वाचनाएँ : धवल ग्रन्थ की 16 पुस्तकें तथा जयधवल ग्रंथ की 6 पुस्तकें, शेष जारी हैं।

गोष्ठियाँ : विद्वत, शिक्षक, प्राचार्य, न्यायाधीश–वकील, डॉक्टर्स, शासनिक।

अहिंसा, शाकाहार एवं व्यसन मुक्ति

अभियान : भिण्ड (म.प्र.), बीना (म.प्र.), भिलाई (छ.ग.), कारंजा (महा.), मेलचित्तामूर (तमिल.), उदगाँव (महा.), गाँधीनगर (गुजरात), लोहारिया (राज.), अजमेर (राज.), जयपुर (राज.), इन्दौर (म.प्र.) श्रेयांसगिरि (म.प्र.), पथरिया (म.प्र.), भिण्ड (म.प्र.), जिसमें 18 लाख से अधिक छात्र–छात्रायें व्यसनमुक्त, शाकाहारी एवं अहिंसा के उपासक बन चुके हैं।

शिविर : प्रतिवर्ष श्री विराग सम्यग्ज्ञान शिविर, प्रतिभा संस्कार शिविर, पूजन प्रशिक्षण शिविर, भक्तामर शिविर, श्रावक संस्कार शिविर आदि।

विशेष प्रवचन : कॉलेज, स्कूल, जेल, न्यायालय, गौशाला, वृद्धाश्रम, गुरुकुल, मुख्य चौराहे आदि पर हुए।

जेल प्रवचन : भिण्ड, टीकमगढ़, दुर्ग, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, जयपुर, अजमेर, इन्दौर, पन्ना, दमोह।

न्यायालय प्रवचन: अजमेर

पगविहार : 70,000 किलोमीटर से अधिक।

संघ सम्मेलन : भिण्ड, श्रेयांसगिरी, बीना, ललितपुर, श्रवणबेलगोला, औरंगाबाद, जयपुर।

वृहद् यति सम्मेलन:
एवं युगप्रतिक्रमण जयपुर (200 शिष्य–प्रशिष्य, अन्य साधु भी)
श्रमण–श्रमणी की प्राचीन परम्परा की पुनः स्थापना।

दो शब्द

जिज्ञासा के पंखों पर सवार बालमन अपने कल्पना लोक में उड़ना चाहता है। यदि ऐसा हो सकता तो, अभिभावक उसके तर्कात्मक प्रश्नों की झड़ी से बचकर कुछ राहत जरुर अनुभव कर पाते। पर बालक है तो ऐसा, कि प्रश्न पर तर्क पर तर्क दागता ही चला जाता है। वस्तुत: यह उसकी आन्तरिक मन की उत्सुकता है जिसमें वह अपने दृश्य जगत के सभी घटकों की तथ्यात्मक जानकारी पल भर में समेट लेना चाहता है। अपनी क्रिया में उसे बिलम्ब असह्य है। जीवन निर्माण की प्रक्रिया की नींव भरने का यह अनोखा समय है, जब हम बालकों के मन में धर्म संस्कारों की छाया और आस्था की भावना भर सकते हैं। जिससे उसका जीवन सुखमय हो सके। धर्म संस्कार हीन जीवन का विकास हुआ भी तो वह पशु से कुछ अधिक नहीं होगा। पशुता ही उसके जीवन की कहानी होगी जो सभ्य समाज के अन्तर को रह रह कर बेधती रहेगी।

जीवन निर्माण करना हमारे हाथों में है। थोड़ी सी सावधानी से वह महान् देवता बन सकता है और असावधानी से राक्षस। हिरण्यक शिशु और हिरण्य गर्भ में सिर्फ खरे और खोटे का ही अन्तर है। हिरण्य तो दोनों हैं।

बालकों के समुचित विकास को ध्यान में रखकर परमपूज्य आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ने **बाल विज्ञान** की रचना करके भावी समाज निर्माताओं के जीवन में महान् उपकार किया है। अत्यन्त सरल सुबोध शैली में प्रश्नात्मक पद्धति से रचित इन चार भागों से बालकों को धर्मतत्त्व की गहरी जानकारी हो सकेगी। इससे वे अनावश्यक मानसिक श्रम से भी बच सकेंगे। महाराज श्री जी के इस उपकार के प्रति समाज भी सदैव कृतज्ञ रहेगी। **बाल विज्ञान** के दो भाग प्रकाशित हो चुके हैं। सम्प्रति यह तीसरा भाग आपके हाथों में सौंपते हुए अतीव प्रसन्नता हो रही है। इसके प्रकाशन में समस्त सहयोगी धन्यवाद के पात्र हैं आशा है कि आप इस परम्परा को आगे भी निर्वाह करते रहेंगे।

गुरुचरण सेवक

धन्यकुमार राजेश

अनुक्रमणिका

1.	दर्शन–स्तुति	:	7
2.	तत्त्व और पदार्थ	:	9
3.	षट् (छह) आवश्यक कर्तव्य	:	16
4.	बारह–व्रत	:	21
5.	द्रव्य–वार्ता	:	28
6.	श्रावकों के भेद	:	39
7.	कर्म–प्रकृतियाँ	:	46
8.	रत्नत्रय	:	54
9.	परम रत्न	:	62
10.	भगवान नेमीनाथ	:	68

1. दर्शन-स्तुति

सकल ज्ञेय ज्ञायक तदपि, निजानन्द रसलीन।
सो जिनेन्द्र जयवन्त नित, अरि रज रहस विहीन॥

जय वीतराग विज्ञान पूर, जय मोह तिमिर को हरनसूर।
जय ज्ञान अनन्तानन्तधार, दृग सुख वीरज मण्डित अपार॥1॥
जय परम शांति मुद्रा समेत, भविजन को निज अनुभूति हेत।
भवि भागन वचि जोगे वशाय, तुम धुनि है सुनि विभ्रम नशाय॥2॥
तुम गुण चिंतत निज पर विवेक, प्रगटै विघटै आपद अनेक।
तुम जगभूषण दूषण वियुक्त, सब महिमायुक्त विकल्पमुक्त॥3॥
अविरुद्ध शुद्ध चेतन स्वरुप, परमात्म परम पावन अनुप।
शुभ अशुभ विभाव अभाव कीन, स्वाभाविक परिणति मय अछीन॥4॥
अष्टादश दोष विमुक्त धीर, स्वचतुष्टय मय राजत गम्भीर।
मुनी गणधरादि सेवत महन्त, नव केवल लब्धिरमा धरंत॥5॥
तुम शासन सेय अमेय जीव, शिव गये जाहिं जै हैं सदीव।
भवसागर में दुख छार वारि, तारन को और न आप टारि॥6॥
यह लखि निज दुख गद हरण काज, तुमही निमित्त कारण इलाज।
जानें तातैं मैं शरण आय, उचरो निज दुख जो चिर लहाय॥7॥

मैं भ्रम्यो अपन को विसरि आप, अपनाये विधि फल पुण्य-पाप।
निज को पर को करता पिछान, पर में अनिष्टता इष्ट ठान।।8।।
आकुलित भयो अज्ञान धारि, ज्यों मृग-मृगतृष्णा जानि वारि।
तन परणति में, आपो चितार, कबहुँ न अनुभयो स्वपद सार।।9।।
तुमको बिन जाने जो कलेश, पाये सो तुम जानत जिनेश।
पशु नारक नर सुरगति मझार भव धर-धर मर्‍यो अनन्तबार।।10।।
अब काल लब्धि बल तैं दयाल, तुम दर्शन पाय भयो खुशहाल।
मन शांत भयो मिटि सकल द्वन्द, चाख्यो स्वातमरस दुख निकन्द।।11।।
तातैं अब ऐसी करहु नाथ, बिछुरे न कभी तुम चरण साथ।।
तुम गुण गण को नहिं छेव देव, जग तारण को तुम विरद एव।।12।।
आतम के अहित विषय कषाय, इनमें मेरी परणति न जाय।
मैं रहुँ आप में आप लीन, सो करो होऊँ ज्यों निजाधीन।।13।।
मेरे न चाह कछु और ईश, रत्नत्रय निधि दीजै मुनीश।
मुझ कारज के कारन सु आप, शिव करहु हरहु मन मोहताप।।14।।
शशि शांति करन तप हरन हेत, स्वयमेव तथा तुम कुशल देत।
पीवत पीयूष ज्यों रोग जाय, त्यों तुम अनुभव तैं भव नशाय।।15।।
त्रिभुवन तिहुँकाल मंझार कोय, नहीं तुम बिन निज सुखदाय होय।
मो उर यह निश्चय भयो आज, दुख जलधि उतारन तुम जिहाज।।16।।

दोहा

तुम गुण गण मणि गणपति, गणत न पावहिं पार।
'' दौल'' स्वल्पमति किम कहैं, नमु त्रियोग संभार।।

❖ ❖ ❖

2. तत्त्व और पदार्थ

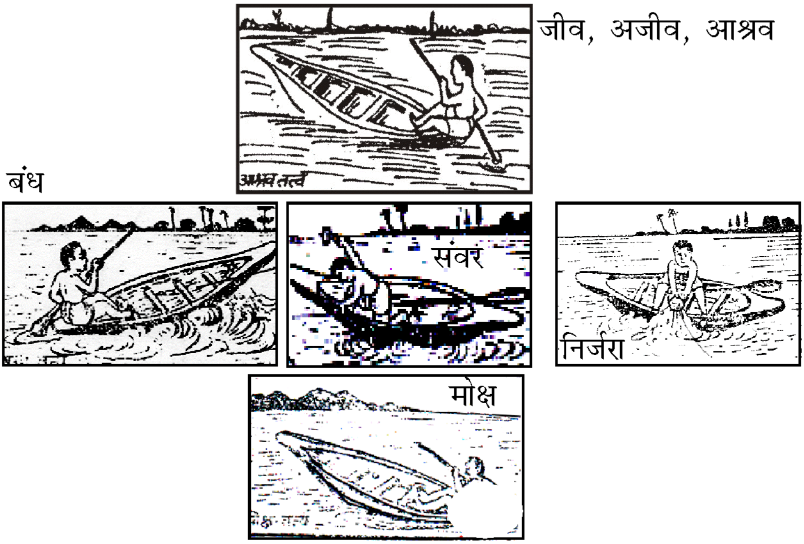

प्रश्न 01. **तत्त्व किसे कहते हैं ?**

उत्तर : वस्तु के भाव (स्वभाव) को तत्त्व कहते हैं।

प्रश्न 02. **तत्त्व कितने होते हैं ?**

उत्तर : : तत्त्व अनेक हैं किन्तु प्रयोजन भूत (उपयोगी) तत्त्व सात हैं।

प्रश्न 03. **प्रयोजन भूत तत्त्व का अर्थ बतायें।**

उत्तर : प्रयोजन भूत का अर्थ है उपयोगी अर्थात् मोक्षमार्ग की प्राप्ति हेतु जिसे जानना समझना श्रद्धान करना आवश्यक हो।

प्रश्न 04. **प्रयोजन भूत सात तत्त्वों के नाम बताओ।**

उत्तर : जीव, अजीव, आस्त्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा मोक्ष। ये सात तत्त्व है।

प्रश्न 05. **जीव तत्त्व किसे कहते हैं?**

उत्तर : जिसमें चेतना हो अर्थात् ज्ञान-दर्शन पाया जाय, उसे जीव तत्त्व कहते हैं।

प्रश्न 06. **अजीव तत्त्व किसे कहते है?**

उत्तर : जिसमें चेतना नहीं पाई जाय, उसे अजीव तत्त्व कहते हैं।

प्रश्न 07. **आस्त्रव तत्त्व किसे कहते हैं?**

उत्तर : आस्त्रव का अर्थ है, आगमन। जिन-जिन कारणों से कर्म आते हैं, उन-उन कारणों को आस्त्रव कहते हैं।

प्रश्न 08. **आस्त्रव के कितने भेद है ?**

उत्तर : आस्त्रव के मुख्य दो भेद हैं- द्रव्यास्त्रव और भावास्त्रव।

प्रश्न 09. **द्रव्यास्त्रव किसे कहते हैं ?**

उत्तर : जिन कारणों से पुदगल कर्म वर्गणाऐं कर्म रुप को प्राप्त हों, उसे द्रव्यास्त्रव कहते हैं।

प्रश्न 10. **द्रव्यास्त्रव के कितने भेद हैं ?**

उत्तर : द्रव्यास्त्रव के दो भेद है : पुण्यास्त्रव और पापास्त्रव।

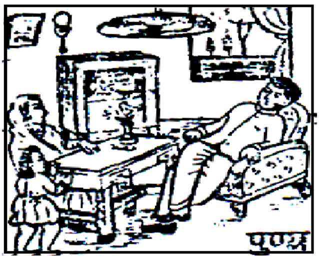

प्रश्न 11. **पुण्य किसे कहते हैं ?**

उत्तर : जो आत्मा को पवित्र करे अथवा इच्छित, इष्ट पदार्थों को प्रदान करे, उसे पुण्य कहते हैं।

प्रश्न 12. **पुण्यास्त्रव कैसे होता है?**

उत्तर : पाँच पापों का त्याग करने से तथा पाँच व्रतों का पालन करते हुए, देवपूजा, व्रत, नियम, संयम, दान, उपवास आदि शुभ क्रियायों को करने से पुण्यास्त्रव होता है।

प्रश्न 13. **''पुण्य तो सिर्फ संसार का ही कारण होगा?'' क्योंकि वह आस्त्रव तत्त्व है?**

उत्तर : हाँ, पुण्य आस्त्रव तत्त्व है किन्तु वह सिर्फ संसार का कारण नहीं है। परम्परा से मोक्ष का भी कारण है।

प्रश्न 14. **पुण्य परम्परा से मोक्ष का कारण, यह कैसे?**

उत्तर : सभी पुण्य संसार के कारण नहीं। जो पुण्य भोगों की आकांक्षा तथा निदान (आगामी भव में फल प्राप्ति) बंध से रहित है, वह शुभ भावों के कारण परम्परा से मोक्ष का कारण बनता है। पुण्य से उत्तम कुल, जाति, जैन-धर्म, निरोग शरीर, उत्तम सत्संगति आदि प्राप्त होती है।

प्रश्न 15. **पुण्य आस्रव तत्त्व ग्राह्य है, या त्याज्य है?**

उत्तर : नहीं! जब तक हम छद्मस्थ (ज्ञान की अपूर्ण) दशा है, नियम से आस्रव होगा, अतः पापास्रव करने की अपेक्षा पुण्यास्रव उचित है। जिससे नरक, निगोद के दुःख से बच सकें।

प्रश्न 16. **आगम (शास्त्र) में कहा है कि जो पुण्य-पाप को समान नहीं मानता वह अज्ञानी है?**

उत्तर : आगम में ठीक ही कहा गया है किन्तु वहाँ के कथन की अपेक्षा समझो। आगम वाक्य है कि ध्यान के समय पुण्य-पाप के फल को समान समझो। अर्थात् दोनों के प्रति समता भाव रखो, संक्लेश परिणाम मत करो।

प्रश्न 17. **क्या पुण्य कार्य करते रहने की आचार्यों की आज्ञा है?**

उत्तर : हाँ, आकांक्षा और निदान (भावीभोगों की प्राप्ति के लिये) रहित पुण्य कार्य करना हितकर है। आचार्यों की आज्ञा है कि, रत्नत्रय धारण करने में तथा निर्विकल्पक ध्यान में असमर्थ भव्यों को पुण्य कार्य करना चाहिए।

प्रश्न 18. **भावास्रव के कितने भेद हैं?**

उत्तर : भावास्रव के 57 भेद है- मिथ्यात्व 5, अविरति 12, कषाय 25, योग 15 इस प्रकार सब मिलकर 5+12+25+15= 57 भेद हैं।

प्रश्न 19. **पाप किसे कहते हैं?**

उत्तर : जिन कार्यों से आत्मा मलीन होती है तथा इहलोक व परलोक में दुःखी होती है- उन कार्यों को पाप कहते हैं।

प्रश्न 20. **पापास्रव किसे कहते हैं?**

उत्तर : जिन कार्यों से अशुभ कर्मों का आस्रव होता है, उसे पापास्रव कहते हैं।

प्रश्न 21. **पापास्रव के कितने भेद हैं?**

उत्तर : पापास्रव के अनेक भेद हैं जिनमें 5 मुख्य हैं- हिंसा, असत्य, चोरी, अब्रह्म (कुशील) परिग्रह।

प्रश्न 22. **भावास्रव किसे कहते हैं?**

उत्तर : जीव के अंतरंग में शुभ-अशुभ रूप भाव (परिणाम) होते हैं। इसे ही भावास्रव कहते हैं।

प्रश्न 23. **बंध तत्त्व किसे कहते हैं?**

उत्तर : बंध का अर्थ है बंधन। आत्मा के साथ कर्म प्रदेशों का (कर्म पुद्गल परमाणुओं का) जल और दूध की तरह एकमेक होना (मिल जाना) बंध है।

प्रश्न 24. **बंध के मुख्य भेद कितने हैं?**

उत्तर : बंध के मुख्य दो भेद हैं- द्रव्य बंध और भाव बंध।

प्रश्न 25. **द्रव्य बंध किसे कहते हैं? इसके भेद बतायें।**

उत्तर : पुद्गल कर्म वर्गणाओं का जीव के साथ जो बंध होता है उसे द्रव्य बंध कहते हैं। इसके चार भेद हैं, प्रकृतिबंध, स्थितिबंध, अनुभागबंध, प्रदेशबंध।

प्रश्न 26. **भावबंध किसे कहते हैं?**

उत्तर : बंध के कारण भूत जीव के परिणामों को भाव बंध कहते हैं।

प्रश्न 27. **भावबंध के प्रमुख कारण कौन-कौन से हैं?**

उत्तर : भावबंध के प्रमुख कारण पाँच हैं- मिथ्यात्व, अविरति प्रमाद, कषाय, योग।

प्रश्न 28. **संवर तत्त्व किसे कहते हैं?**

उत्तर : जिन कारणों से कर्म आते हैं, उन कारणों को रोक देने को संवर कहते हैं।

प्रश्न 29. **संवर के कितने भेद हैं?**

उत्तर : संवर के मुख्य दो भेद हैं- द्रव्य संवर और भाव संवर।

प्रश्न 30. **द्रव्य संवर किसे कहते हैं?**

उत्तर : जिन कारणों से आत्मा में कर्म परमाणुओं का आगमन रूके, उन कारणों को द्रव्य संवर कहते हैं।

प्रश्न 31. **भाव संवर किसे कहते हैं?**

उत्तर : द्रव्य संवर में कारण भूत जीव के जो परिणाम विशेष हैं, उसे भाव संवर कहते हैं।

प्रश्न 32. **भाव संवर के कितने भेद हैं?**

उत्तर : भाव संवर के 57 भेद हैं।

प्रश्न 33. **भाव संवर के 57 भेद कौन-कौन से हैं?**

उत्तर : भाव संवर के 57 भेद इस प्रकार हैं- 5 महाव्रत, 5 समिति, 3 गुप्ति, 10 धर्म, 22 परीषहजय, 12 अनुप्रेक्षा (भावना)।

प्रश्न 34. **निर्जरा तत्त्व किसे कहते हैं?**

उत्तर : पूर्वबद्ध कर्म प्रदेशों का एक देश (कुछ हिस्सा) झर जाने को निर्जरा कहते हैं।

प्रश्न 35. **निर्जरा के भेद कितने हैं?**

उत्तर : निर्जरा के दो भेद हैं- सविपाक निर्जरा व अविपाक निर्जरा।

प्रश्न 36. **सविपाक निर्जरा किसे कहते हैं? उदाहरण देकर समझायें।**

उत्तर : जो कर्म, स्थिति पूर्ण होने पर अपना फल देकर खिरते हैं, उसे सविपाक निर्जरा कहते हैं। जैसे: कोई कर्म दस वर्ष काल की स्थिति वाला है वह कर्म फल का रसास्वादन करा के दस वर्ष बाद खिर गया। इसे सविपाक निर्जरा कहते हैं।

प्रश्न 37. **अविपाक निर्जरा किसे कहते हैं? उदाहरण देकर समझायें।**

उत्तर : पूर्वबद्ध कर्मों को तपबल से समय से पूर्व ही खिरा देना अविपाक निर्जरा (अर्थात् वह अपना फल न देने पावे) हैं। यदि बद्ध कर्म दस वर्ष का है तो उसे तपस्या करके दो वर्ष में ही खिरा देना। जैसे: पेड़ में लगा फल समय पर पकता है किन्तु उसे पूर्व में तोड़कर पाल में लगाकर समय के पहले ही पका लेना।

प्रश्न 38. **अविपाक निर्जरा में तप की क्या परम आवश्यकता है?**

उत्तर : हाँ! अविपाक निर्जरा में तप की परम आवश्यकता है। इसके बिना यह निर्जरा नहीं हो सकती।

प्रश्न 39. **अकाम निर्जरा क्या है?**

उत्तर : अज्ञान या मिथ्यात्व की दशा में काय-क्लेश सहते हुये कर्मों की जो निर्जरा होती है उसे अकाम निर्जरा कहते हैं।

प्रश्न 40. **मोक्ष तत्त्व किसे कहते हैं?**

उत्तर : समस्त कर्मों से छुटकारा हो जाने को (सम्पूर्ण कर्मों के नष्ट हो जाने की अवस्था) मोक्ष कहते हैं।

प्रश्न 41. **समस्त कर्मों से मुक्त आत्मा कहाँ जाती है?**

उत्तर : समस्त कर्मों से मुक्त आत्मा सिद्धालय में विराजमान हो जाती है।

प्रश्न 42. **सिद्धालय में आत्मा क्या करती है?**

उत्तर : सिद्धालय में आत्मा अपने अनंतानंत ज्ञान-दर्शनादि गुणों में लीन रहती है।

प्रश्न 43. **सिद्धात्मा संसार में कब वापस आती है?**

उत्तर : सिद्धात्मा संसार में कभी वापस नहीं आती है।

प्रश्न 44. **पदार्थ किसे कहते हैं?**

उत्तर : प्रयोजन भूत तत्त्वों को पदार्थ कहा जाता है।

प्रश्न 45. **पदार्थ कितने हैं? नाम गिनाओ।**

उत्तर : पदार्थ 9 हैं- जीव, अजीव, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा, मोक्ष, पुण्य और पाप।

प्रश्न 46. **तत्त्व और पदार्थ को जानने से क्या लाभ होता है?**

उत्तर : तत्त्व और पदार्थ को जानने से यथार्थ ज्ञान (सत्यज्ञान) होता है। जिससे सच्चा श्रद्धान होता है और सच्चे श्रद्धान से सम्यग्दर्शन की प्राप्ति होती है।

❖ ❖ ❖

सात तत्व का गाना

तत्व गिनाना, तत्व-गिनाना सातों तत्व गिनाना, तत्व गिनाना
हम भी गाये, तुम भी गाओ सात तत्व का गाना
तत्व गिनाना......

पहला जीव तत्व राजा है, चेतना से भरा हुआ
दूसरा है अजीव देखो, बिना चेतना पड़ा हुआ
आऽऽऽ-जीव अजीव अलग-अलग हैं क्या तुमने पहचाना।
तत्व गिनाना......

तीसरा है आस्रव जो कि कर्मों को बुलवाता है
चौथा बंध तत्व आत्मा से कर्मों को बंधवाता है
आऽऽऽ-जो इनके चक्कर में आता, पड़ता दुःख उठाना
तत्व गिनाना......

पाँचवा संवर है जो कि, बंद करे कर्मों का द्वार
छटवाँ तत्व निर्जरा प्यारा, कर्म झराये झर-झर मार
आऽऽऽ-इनका आश्रय लेकर सातवें, मोक्ष तत्व को पाना
कर्म खपाना.....

तत्व गिनाना-निगाना सातों तत्व गिनाना, तत्व गिनाना
इन पर श्रद्धा करके तुम भी मोक्ष महल को जाना
तत्व गिनाना......

3. षट् (छह) आवश्यक कर्तव्य

देवपूजा

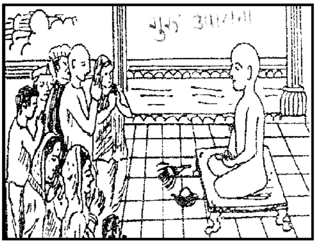

गुरु उपासना

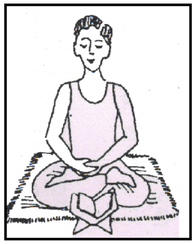

स्वाध्याय

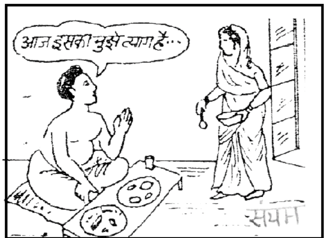

संयम

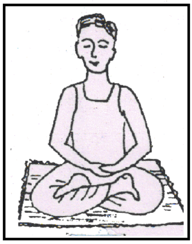

तप

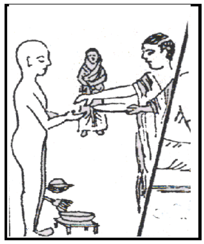

दान

प्रश्न 1. **आवश्यक कर्तव्य किसे कहते हैं?**

उत्तर : नित्य अवश्य करने योग्य कार्य को आवश्यक कहते हैं।

प्रश्न 2. **श्रावकों के आवश्यक कर्तव्य कितने तथा कौन-2 से हैं?**

उत्तर : श्रावकों के मुख्य छह कर्तव्य हैं– 1. देव पूजा 2. गुरु उपासना 3. स्वाध्याय 4. संयम 5. तप 6. दान।

प्रश्न 3. **देव पूजा किसे कहते हैं?**

उत्तर : वीतरागी जिनेन्द्र भगवान की भक्ति (आराधना) को देव पूजा कहते हैं।

प्रश्न 4. **जिनेन्द्र भगवान की पूजा कितने प्रकार से हो सकती है?**

उत्तर : जिनेन्द्र भगवान की पूजा दो प्रकार से हो सकती है–
1. द्रव्य पूजा 2. भाव पूजा

प्रश्न 5. **द्रव्य पूजा व भाव पूजा का अर्थ बतायें तथा इसके करने के अधिकारी कौन हैं?**

उत्तर : अष्ट द्रव्यों द्वारा जो भक्ति से पूजा की जाती है उसे द्रव्य पूजा

कहते हैं। इस द्रव्य पूजा को करने के अधिकारी समस्त गृहस्थ, श्रावक हैं। द्रव्य से रहित हो भक्ति करना भाव पूजा है। इस भाव पूजा करने के अधिकारी अनगारी होते हैं।

प्रश्न 6. **क्या मात्र भाव पूजा गृहस्थ श्रावक कर सकते हैं?**

उत्तर : नहीं! गृहस्थ परिग्रही होते हैं, उसका मन भाव पूजा में इतना एकाग्र नहीं हो सकता, उसके लिये कुछ न कुछ आधार चाहिये। अतः द्रव्य पूर्वक ही भाव पूजा कर सकते हैं। हाँ यदि द्रव्य उपलब्ध न हो सके या असमर्थता की अवस्था में मात्र भाव पूजा की जा सकती है।

प्रश्न 7. **गुरु उपासना किसे कहते हैं?**

उत्तर : निर्ग्रन्थ दिगम्बर मुनियों की यथा योग्य भक्ति, वैयावृत्ति आदि करने को गुरु उपासना कहते हैं।

प्रश्न 8. **सच्चे गुरु के कितने भेद हैं?**

उत्तर : सच्चे गुरु के मुख्य 3 भेद हैं-

1. आचार्य 2. उपाध्याय 3. निर्ग्रन्थसाधु (मुनि)।

प्रश्न 9. **क्या पंचमकाल में सद्‌गुरु हो सकते हैं?**

उत्तर : हाँ, पंचमकाल में भी सच्चे निर्ग्रन्थ गुरु होते हैं तथा वर्तमान में हमारे समक्ष भी हैं।

प्रश्न 10. **यदि कोई मुनि कुछ गलती करे या अपनी क्रियाओं का यथार्थ पालन न करे तो हमको क्या करना चाहिए?**

उत्तर : यदि कदाचित् कोई मुनि विपरीत कार्य कर रहे हों या अपने आवश्यक कर्तव्यों को पूर्ण रूप से पालन नहीं कर सक रहे हों तो एकान्त (अकेले) में समझाना चाहिये। बार-बार समझाने पर भी यदि नहीं मानें तो फिर मध्यस्थ हो जाना चाहिये। किन्तु कभी भी उनकी निन्दा नहीं करना चाहिये।

प्रश्न 11. **कोई मुनि गलती करे तो उनकी निन्दा करने में क्या हानि है? सही ही तो कह रहा हूँ।**

उत्तर : आपका कहना ठीक नहीं है। मुनि की निंदा का अर्थ है, अपने धर्म की निंदा करना, और फिर ऐसा करने से क्या वे सुधर

जावेंगे? नहीं! अपितु उनकी निन्दा ही अन्य दिगम्बर मुनियों की निन्दा करने जैसा ही है। अत: ऐसा करना ठीक नहीं है।

प्रश्न 12. **स्वाध्याय किसे कहते है तथा उसके भेद बताओ?**

उत्तर : आत्म कल्याण हेतु जिनवाणी का पठन, श्रवण, चिंतन आदि को स्वाध्याय कहते हैं। स्वाध्याय 5 प्रकार का होता है–

1. वाचना 2. पृच्छना 3. अनुप्रेक्षा 4. आम्नाय 5. धर्मोपदेश

प्रश्न 13. **वाचना स्वाध्याय किसे कहते हैं?**

उत्तर : दिगम्बर जैन आचार्यों द्वारा रचित जिनवाणी को शुद्ध एवं विनयपूर्वक भक्ति से पढ़ने को वाचना नामक स्वाध्याय कहते हैं।

प्रश्न 14. **पृच्छना स्वाध्याय किसे कहते हैं?**

उत्तर : शास्त्र चर्चा में उपस्थित विषय को और अधिक स्पष्ट रूप से समझने–समझाने हेतु एक दूसरों से प्रश्न पूछने को पृच्छना स्वाध्याय कहते हैं।

प्रश्न 15. **अनुप्रेक्षा स्वाध्याय किसे कहते हैं?**

उत्तर : जिनवाणी के पढ़ने अथवा श्रवण करने के बाद जो उसका बार– बार चिन्तवन किया जाता है, उसे अनुप्रेक्षा नामक स्वाध्याय कहते हैं।

प्रश्न 16. **आम्नाय स्वाध्याय किसे कहते हैं?**

उत्तर : जिनवाणी के जो वाक्य पढ़े अथवा सुने हैं, उनको बार–बार दोहराना अथवा कंठस्थ करने को आम्नाय नामक स्वाध्याय कहते हैं।

प्रश्न 17. **धर्मोपदेश नामक स्वाध्याय किसे कहते हैं?**

उत्तर : जो प्राणी, तत्त्व व संयम को नहीं जानता है, उसे सच्चा उपाय बतलाकर पापाचरण से दूर करने को धर्मोपदेश नामक स्वाध्याय कहते हैं।

प्रश्न 18. **संयम किसे कहते हैं?**

उत्तर : सभी प्रकार के जीवों की रक्षा एवं पाँचों इन्द्रियों तथा मन को वश में करने के लिये जो प्रतिज्ञा (व्रत) ली जाती है, उसे संयम कहते हैं।

प्रश्न 19. **संयम के मुख्य कितने भेद हैं। नाम बताओ?**

उत्तर : संयम के मुख्य दो भेद हैं- 1. प्राणी-संयम 2. इन्द्रिय-संयम

प्रश्न 20. **प्राणी-संयम किसे कहते हैं?**

उत्तर : पृथ्वी कायिक, जल कायिक, अग्नि कायिक, वायु कायिक, वनस्पति कायिक और त्रस कायिक, इन छह प्रकार के जीवों की रक्षा करने को प्राणी-संयम कहते हैं।

प्रश्न 21. **इन्द्रिय-संयम किसे कहते हैं?**

उत्तर : पाँचों इन्द्रिय और मन को वश में रखने को इन्द्रिय-संयम कहते हैं।

प्रश्न 22. **तप किसे कहते हैं?**

उत्तर : जिससे आत्मा को तपाया जाये, उसे तप कहते हैं।

प्रश्न 23. **तप के मुख्य भेद कौन से हैं?**

उत्तर : तप के मुख्य दो भेद हैं- 1. बाह्य-तप 2. आभ्यंतर-तप

प्रश्न 24. **बाह्य-तप किसे कहते हैं और उसके कितने भेद हैं?**

उत्तर : जो बाहर से दिखने में आ सकता है उसे बाह्य-तप कहते हैं, उसके 6 भेद हैं- अनशन (उपवास), ऊनोदर (भूख से कम खाना), व्रतपरिसंख्यान (आहार से पूर्व नियम लेना), रस परित्याग (यथाशक्ति रस का त्याग), विविक्त शय्यासन (आसन विषयक कष्ट सहना), काय-क्लेश (शारीरिक कष्ट सहना)।

प्रश्न 25. **आभ्यंतर-तप किसे कहते हैं?**

उत्तर : जो दिखने में न आ सके, उसे आभ्यंतर या अंतरंग तप कहते हैं। उसके 6 भेद होते हैं- 1. प्रायश्चित 2. विनय 3. वैय्यावृति 4. स्वाध्याय 5. व्युत्सर्ग (कायोत्सर्ग) 6. ध्यान।

प्रश्न 26. **दान किसे कहते हैं?**

उत्तर : स्व-पर उपकार के लिये जो वस्तु का त्याग किया जाता है, उसे दान कहते हैं।

प्रश्न 27. **दान से स्व-पर का उपकार कैसे होता है?**

उत्तर : पात्र जीव को दान देने से वह स्वयं धर्मध्यान, तप एवं ज्ञान की वृद्धि करेगा। इसलिये पर-उपकार हुआ तथा उक्त वस्तु के प्रति

हमारा मोह आदि घटा एवं उक्त पात्र द्वारा रत्नत्रय का सद्उपदेश प्राप्त हुआ यह दान से स्व-उपकार हुआ।

प्रश्न 28. **दान के मुख्य कितने भेद हैं?**

उत्तर : दान के मुख्य चार भेद हैं- 1. आहार दान 2. शास्त्र दान 3.अभय दान 4. औषधि दान।

प्रश्न 29. **दान के योग्य कौन-कौन तथा कितने पात्र हैं?**

उत्तर : सत्पात्र ही दान के योग्य पात्र होते हैं। इनके तीन प्रकार हैं- 1. उत्तम पात्र (मुनि आदि) 2. मध्यम-पात्र (व्रती-श्रावक) 3. जघन्य पात्र (अविरत-सम्यग्दृष्टि)।

❖ ❖ ❖

षट् आवश्यक

वन टू थ्री फॉर फाइव सिक्स
षट् आवश्यक होते फिक्स
नम्बर वन इज देव पूजा
इसके बाद काम हो दूजा
नम्बर टू इज गुरु उपासना
स्वार्थ व्याग की करें साधना
नम्बर थ्री इज स्वाध्याय
जिनवाणी माँ ज्ञान बढ़ाये
नम्बर फोर इज संयम
इंद्रिय, मन को जीतें हम
नम्बर फाईव इज तप
शक्ति देखो कर लो व्रत
नम्बर सिक्स इज दान
आहार, अभय, औषध और ज्ञान
नहीं करेंगे इनको मिस
षट् आवश्यक होते फिक्स।।

4. बारह-व्रत

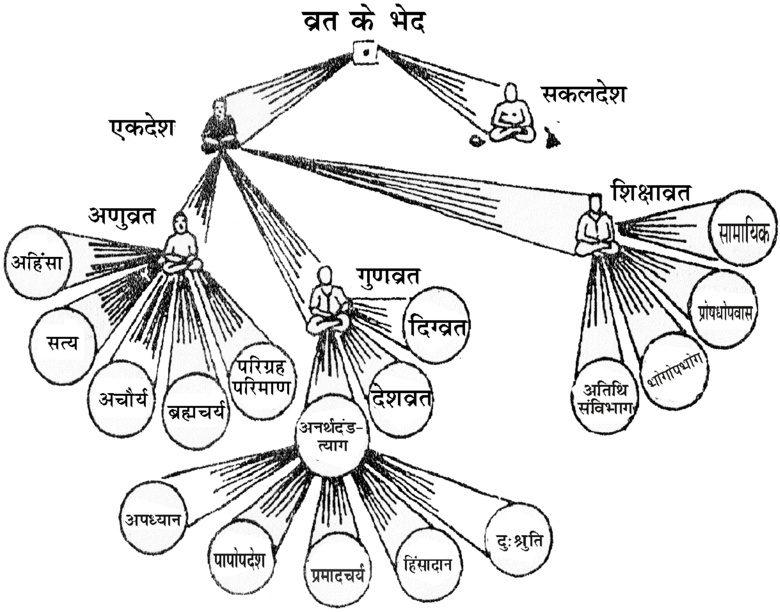

प्रश्न 1. **व्रत किसे कहते हैं?**

उत्तर : हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील तथा परिग्रह इन पाँचों पापों से विरक्ति का नाम व्रत है।

प्रश्न 2. **व्रत के कितने भेद हैं? तथा कौन-कौन से हैं?**

उत्तर : व्रत के मुख्य दो भेद हैं- 1. देशव्रत (अणुव्रत) 2. सकल-व्रत (महाव्रत)।

प्रश्न 3. **देशव्रत किसे कहते हैं?**

उत्तर : श्रावकों के व्रतों को देश व्रत कहते हैं।

प्रश्न 4. **श्रावकों के व्रत कितने होते हैं? तथा कौन-कौन से हैं?**

उत्तर : श्रावकों के बारह व्रत होते हैं- पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत, चार शिक्षाव्रत।

प्रश्न 5. **अणव्रुत किसे कहते हैं?**

उत्तर : एक देश (स्थूल) पापों के त्याग को अणुव्रत कहते हैं।

प्रश्न 6. **अणुव्रत कितने होते हैं? नाम बताओ?**

उत्तर : अणुव्रत पाँच होते हैं- 1.अहिंसाणुव्रत, 2. सत्याणुव्रत, 3. अचौर्याणुव्रत, 4. ब्रह्मचर्याणुव्रत, 5. परिग्रह परिमाणाणुव्रत।

प्रश्न 7. **अहिंसाणुव्रत किसे कहते हैं?**

उत्तर : स्थूल हिंसा (संकल्पी हिंसा) के त्याग को अहिंसाणुव्रत कहते हैं।

प्रश्न 8. **सत्याणुव्रत किसे कहते हैं?**

उत्तर : स्थूल झूठ के त्याग को सत्याणुव्रत कहते हैं। अर्थात्, ऐसा झूठ नहीं बोलना जिससे किसी के प्राणों का विनाश हो जाए तथा ऐसा सत्य भी नहीं बोलना जिससे किसी के प्राणों का विनाश हो जाय।

प्रश्न 9. **अचौर्याणुव्रत किसे कहते हैं?**

उत्तर : किसी की रखी हुई, या पड़ी हुई वस्तु को बिना पूछे नहीं लेना और न किसी को देने को, अचौर्याणुव्रत कहते हैं।

प्रश्न 10. **ब्रह्मचर्याणुव्रत किसे कहते हैं?**

उत्तर : अपनी स्त्री को छोड़कर शेष सभी स्त्रियों को माता, बहिन और पुत्री के समान समझने को ब्रह्मचर्याणुव्रत कहते हैं।

प्रश्न 11. **परिग्रह परिमाणाणुव्रत किसे कहते हैं?**

उत्तर : परिग्रह की मर्यादा (प्रमाण या सीमा) को परिग्रह परिमाणाणुव्रत कहते हैं।

प्रश्न 12. **अणुव्रत पालन करने में कौन-कौन महापुरुष प्रसिद्ध हुए, नाम बताओ?**

उत्तर : 1. अहिंसाणुव्रत में - यमपाल चांडाल

2. सत्याणुव्रत में - धनदेव सेठ

3. अचौर्याणुव्रत में - राजकुमार वारिषेण

4. ब्रह्मचर्याणुव्रत में - नीलीदेवी (सेठ पुत्री)

5. परिग्रह परिमाणाणुव्रत में - जयकुमार सेठ

प्रश्न 13. **गुणव्रत किसे कहते हैं?**

उत्तर : जो व्रत अणुव्रतों के गुणों को बढ़ायें, उन्हें गुणव्रत कहते हैं।

प्रश्न 14. **गुणव्रत कितने तथा कौन-कौनसे हैं नाम बताओ?**

उत्तर : गुणव्रत तीन होते हैं- 1. दिग्व्रत 2. देशव्रत 3. अनर्थदंडविरतिव्रत।

प्रश्न 15. **दिग्व्रत किसे कहते हैं?**

उत्तर : दशों दिशाओं में आने-जाने की सीमा (मर्यादा) करने को दिग्व्रत कहते हैं।

प्रश्न 16. **देशव्रत किसे कहते हैं?**

उत्तर : नित्य गमना-गमन की सीमा को निश्चित कर लेना अर्थात् आज मैं इस ग्राम, मोहल्ला, गली, मकान आदि से बाहर नहीं जाऊँगा। इस प्रकार सीमा को देशव्रत कहते हैं।

प्रश्न 17. **दिग्व्रत और देशव्रत में क्या अन्तर है?**

उत्तर : जीवन पर्यन्त के लिए जो स्थूल मर्यादा है उसे दिग्व्रत कहते हैं तथा उस दिग्व्रत के अन्दर नित्य ली जाने वाली मर्यादा को देशव्रत कहते हैं। यही दोनों में अन्तर है।

प्रश्न 18. **अनर्थदण्ड विरति व्रत किसे कहते हैं?**

उत्तर : बिना प्रयोजन के कार्य करने को अनर्थदण्ड कहते हैं और इससे विरक्त रहने को ही अनर्थदण्ड विरति व्रत कहते हैं।

प्रश्न 19. **बिना प्रयोजन कार्य करने से क्या हानि होती है?**

उत्तर : फालतू/अनावश्यक कार्य करने से अनेक जीवों की हिंसा होती है।

प्रश्न 20. **अनर्थदण्ड के कितने भेद हैं? नाम बताओ?**

उत्तर : अनर्थदण्ड के पाँच भेद हैं- 1. पापोपदेश 2. हिंसादान 3. दुःश्रुति 4. अपध्यान 5. प्रमादचर्या।

प्रश्न 21. **शिक्षाव्रत किसे कहते हैं?**

उत्तर : जो व्रत मुनि बनने की शिक्षा देते हैं उन्हें शिक्षाव्रत कहते हैं।

प्रश्न 22. **शिक्षाव्रत कितने तथा कौन-कौन से हैं?**

उत्तर : शिक्षाव्रत चार हैं- 1. सामायिक 2. प्रोषधोपवास 3. भोगोपभोग परिमाण 4. अतिथि संविभाग व्रत।

प्रश्न 23. **सामायिक किसे कहते हैं?**

उत्तर : नियत समय तक समस्त पाप योग का त्याग करके, प्रतिदिन समता भाव से रहने को तथा उस समय पंच परमेष्ठी की वन्दना आदि करना, बारह भावना आदि का चिन्तवन करने को सामायिक कहते हैं।

प्रश्न 24. **सामायिक करने की विधि संक्षेप में समझाओ।**

उत्तर : पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके खड़े होकर या बैठकर उस दिशा सम्बन्धी केवली, जिन, सिद्ध, साधुओं के संघ, कृत्रिम अकृत्रिम जिनचैत्य-चैत्यालयों को तीन आवर्त तथा कायोत्सर्ग कर एक शिरोनति (प्रणाम) करें इस प्रकार उक्त क्रियाओं को सामायिक के प्रारंभ एवं अंत में चारों दिशा में अलग-अलग करके यथाशक्ति 2, 3, 4, घड़ी का प्रमाण (मर्यादा) लेकर करना चाहिए।

प्रश्न 25. **पूर्व या उत्तर दिशा की ओर ही मुख क्यों करना चाहिए?**

उत्तर : पूर्व या उत्तर ये दो दिशा शुभ कार्य के लिए प्रशस्त बतलाई गयी हैं क्योंकि उक्त दिशाओं की ओर मुख करके धर्म साधना करने से उपयोग अधिक लगता है।

प्रश्न 26. **पूर्व या उत्तर ये दो दिशायें ही प्रशस्त क्यों हैं?**

उत्तर : पूर्व दिशा में शाश्वत् निर्वाण भूमि श्री सम्मेद शिखर जी है और उत्तर दिशा में विद्यमान बीस तीर्थंकरों की उत्पत्ति स्थान विदेह क्षेत्र है इसलिये ये दोनों दिशाएँ उत्तम मानी गयी हैं।

प्रश्न 27. **कृत्रिम तथा अकृत्रिम किसे कहते हैं?**

उत्तर : जो किसी न किसी के द्वारा बनाये जाये उसे कृत्रिम तथा जो किसी के भी द्वारा न बनाया गया हो, (स्वाभाविक हो) उसे अकृत्रिम कहते हैं।

प्रश्न 28. **चैत्य या चैत्यालय किसे कहते हैं?**

उत्तर : जिनेन्द्र भगवान की मूर्ति को चैत्य एवं जिस मन्दिर में वे मूर्ति स्थापित की जाएं उसे चैत्यालय कहते हैं।

प्रश्न 29. **आवर्त किसे कहते हैं?**

उत्तर : दोनों हाथों को मुकलित (जोड़) कर उन्हें दांये से बायीं ओर एक बार घुमाने को आवर्त कहते हैं।

प्रश्न 30. **तीन आवर्त क्यों करना चाहिए?**

उत्तर : तीन आवर्त, मनशुद्धि, वचनशुद्धि, एवं कायशुद्धि के सूचक हैं।

प्रश्न 31. **शिरोनति किसे कहते हैं?**

उत्तर : दोनों हाथ जोड़ के शीश झुकाकर नमस्कार करने को शिरोनति कहते हैं।

प्रश्न 32. **कायोत्सर्ग किसे कहते हैं?**

उत्तर : शरीर से ममत्व, मोह आदि हटाने को कायोत्सर्ग कहते हैं।

प्रश्न 33. **कायोत्सर्ग कैसे करना चाहिए?**

उत्तर : खड़े होकर, दोनों पैरों के बीच में चार-चार अंगुल का अन्तर रखकर, दोनों हाथों को नीचे करके, विशुद्ध हृदय से 9 बार णमोकार मंत्र का उच्चारण करने को कायोत्सर्ग कहते हैं।

प्रश्न 34. **प्रणाम कैसे करना चाहिए।**

उत्तर : स्वच्छ, निर्जन्तुक स्थान में गवासन या पंचांगासन से बैठकर विनय पूर्वक नमस्कार करने को प्रणाम कहते हैं।

प्रश्न 35. **प्रोषधोपवासव्रत किसे कहते हैं?**

उत्तर : दो एकाशन सहित एक उपवास करने को प्रोषधोपवास व्रत कहते हैं जैसे अष्टमी का प्रोषधोपवास करना हो तो सप्तमी एवं नवमी को एकाशन तथा अष्टमी को उपवास करें इसी प्रकार चतुर्दशी को भी करें।

प्रश्न 36. **प्रोषध किसे कहते हैं?**

उत्तर : एकाशन अर्थात् एक ही बार भोजन करने व पानी-पीने को प्रोषध कहते हैं।

प्रश्न 37. **उपवास किसे कहते हैं?**

उत्तर : सभी प्रकार के आहार एवं पानी-पीने के त्याग को उपवास कहते हैं।

प्रश्न 38. **भोगोपभोग परिमाण व्रत किसे कहते हैं?**

उत्तर : भोग एवं उपभोग वस्तुओं की मर्यादा को भोगोपभोग परिमाण व्रत कहते हैं।

प्रश्न 39. **भोग वस्तु किसे कहते हैं?**

उत्तर : जो एक बार भोगने में आये उसे भोग कहते हैं। जैसे- भोजन-पानी आदि।

प्रश्न 40. **उपभोग किसे कहते हैं?**

उत्तर : जो बार-बार भोगने में आये उसे उपभोग कहते हैं। जैसे- वस्त्र, बर्तन, टेबिल, कुर्सी आदि।

प्रश्न 41. **परिमाण किसे कहते हैं?**

उत्तर : भोगोपभोग वस्तुओं की मर्यादा (सीमा) को परिमाण कहते हैं। जैसे- आज इतनी बार भोजन करूँगा, इतने कपड़े (ड्रेस) पहनूँगा आदि।

प्रश्न 42. **अतिथि संविभाग व्रत किसे कहते हैं?**

उत्तर : किसी भी मुनि, आर्यिका, श्रावक-श्राविका आदि व्रतीजनों को यथाशक्य भोजन, उपकरण, औषधि आदि प्रदान करने को अतिथि संविभाग व्रत कहते हैं।

प्रश्न 43. **वैयावृत्ति किसे कहते हैं?**

उत्तर : सत्पात्र को आहारदान एवं उनकी यथा योग्य सेवा शुश्रूषा करने को वैयावृत्ति कहते हैं।

प्रश्न 44. **व्रतों के पालन में किस बात का ध्यान रखना चाहिए?**

उत्तर : व्रतों के पालन में व्रत की भावना के अनुसार कोई त्रुटि नहीं करना चाहिये अन्यथा व्रत में अतिचार (दोष) लगता है। अतिचार से पाप का बंध होता है।

प्रश्न 45. **व्रत में अतिचार लगने पर क्या करना चाहिए?**

उत्तर : व्रत में भूल से अतिचार लग जाने पर सुयोग्य गुरुजनों से पूछकर प्रायश्चित करना चाहिए।

प्रश्न 46. **इन व्रतों को पालने से क्या लाभ होता है?**

उत्तर : इन व्रतों को पालने से जीव नरक-निगोद से बचकर स्वर्ग एवं परम्परा से मोक्ष को प्राप्त होता है।

प्रश्न 47. **व्रती के महत्व को संक्षेप में कहो?**

उत्तर : धन्य हैं वह प्राणी! जिसने अपने जीवन को व्रत-नियम संयम से सजाया, उसका ही मनुष्य भव सफल है, उसने ही बड़े-बड़े शास्त्रों के रहस्य को समझा है। वही विद्वान पंडित है। वही अन्तर आत्मा के दर्शन कर सकता है। अतः हे भव्यजनों! इन

व्रतों को निरतिचार पालन करते हुए मोक्ष-पथ में अपने कदम बढ़ाओ।

प्रश्न 48. **इस पाठ के पढ़ने से हमें क्या शिक्षा मिलती है।**

उत्तर : इस पाठ से हमें यह शिक्षा मिलती है कि, मानव जीवन में व्रतों के पालन से सुख-शांति की प्राप्ति होती है, तथा आत्म-कल्याण के पथ में बढ़कर हम अपना आगामी भव सुधार सकते हैं। व्रतों के बिना मानव जीवन व्यर्थ है।

❖ ❖ ❖

बारह व्रत

पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत
शिक्षाव्रत हैं चार
श्रावक के व्रत कहलाते हैं
होते ये बारह प्रकार
अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य
परिग्रह का परिमाण
अणुव्रत पूरे पाँच हैं
याद करो तुम इनके नाम
दिग्व्रत, देशव्रत, अनर्थदण्ड व्रत
गुणव्रत होते तीन शिक्षाव्रत तो चार हैं याद करो प्रवीन
पहला सामायिक शिक्षाव्रत। दूसरा प्रोषधोपवास।।
भोगोपभोग परिमाण तीसरा। चौथा अतिथि संविभाग।।
श्रावक के बाहर व्रत पालो। स्वर्ग वैभव पाओ।।
वहाँ से आकर मुनि बनो और
सीधे शिवपुर जाओ।।

5. द्रव्य-वार्ता

(शिक्षार्थी–नेमी–सन्मति–शांति और धर्म, एवं गुरुजी आचार्य जी के प्रवचन के बाद आपस में चर्चा कर रहे हैं।)

नेमी – धर्म, आज शिविर में आचार्य श्री ने द्रव्य की व्याख्या की है, पर मुझे समझ में नहीं आयी।

धर्म – अरे! तुम्हें पता नहीं, कल ही तो आचार्य श्री ने बताया था कि सत् को द्रव्य कहते हैं।

सन्मति – सत्! सत् क्या है?

धर्म – अरे भैय्या! उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य को सत् कहते हैं और सत् द्रव्य का लक्षण है।

सन्मति – हम नहीं समझे इसे! कि आपने क्या कहा?

धर्म – सन्मति! देखो वस्तु में नयी पर्याय का उत्पन्न होना उत्पाद

कहलाता है। पुरानी पर्याय के अभाव (नाश) को व्यय कहते हैं और दोनों में समान रूप से परिणमन करने वाले को ध्रौव्य कहते हैं।

नेमी – आप मुझे किसी उदाहरण द्वारा समझाइये।

धर्म – ध्यान से सुनो! किसी सुनार ने स्वर्ण के कुण्डल को पिघलाकर एक मुकुट बनाया। तो मुकुट पर्याय की उत्पत्ति हुई, यह उत्पाद है। कुण्डल पर्याय का विनाश, यह व्यय है। स्वर्ण का दोनों रूप में यथा योग्य परिणमन करते हुये भी ज्यों का त्यों रहना ध्रौव्य है।

शान्ति – तो ध्रौव्य ही द्रव्य हुआ किन्तु उत्पाद-व्यय को भी द्रव्य क्यों कहा है?

सन्मति – भैया शान्ति! उत्पाद-व्यय और ध्रौव्य ये तीनों अलग-अलग नहीं है; अपितु एक ही द्रव्य की ये तीन अवस्थायें हैं।

शान्ति – अवस्थायें भले ही हो, रही आवें किन्तु द्रव्य का लक्षण ध्रौव्य ही घटित होता है।

सन्मति – क्या बिना उत्पाद और व्यय के ध्रौव्य की स्थिति स्पष्ट हो सकती है? बोलो! यदि हाँ हो तो वह किस रूप में होगा? फिर वह कूटस्थ ठहरेगा, ऐसी हालत में प्रत्यक्ष से विरोध आयेगा। क्या कुण्डल रूप पर्याय अलग होगी और स्वर्ण द्रव्य सर्वथा अलग ही सिद्ध होगा अथवा जो भी उसकी पर्याय होगी वह मात्र एक ही सिद्ध होगी। फिर उसका कभी अभाव नहीं हो सकेगा। बिना अभाव के नयी पर्याय भी नहीं हो सकेगी। कड़ा सदा कड़ा रूप ही रहेगा कुण्डल या मुकुट रूप नहीं बन सकेगा, इत्यादि बहुत से दोष आवेंगे।

शान्ति – अच्छा तो मुझे समझ में आया कि उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य रूप में ही द्रव्य होता है किन्तु अभी आप गुण और पर्याय शब्द का भी बार-बार उच्चारण कर रहे थे।

सन्मति – शान्ति! आगम में गुण और पर्याय को भी द्रव्य कहा है। यद्यपि

यह भी उक्त लक्षणों का एक समानान्तर नाम है।

शान्ति – यह कैसे,

सन्मति – सुनो! मैं स्पष्ट करता हूँ। उत्पाद–व्यय का अर्थ है उत्पन्न होना और नष्ट होना। पर्यायें सदा उत्पन्न तथा नष्ट होती रहती हैं इसलिये पर्यायों को विनाशिक भी कहते हैं। किन्तु द्रव्य या गुण ध्रौव्य रूप में रहते हैं उनका न तो उत्पाद होता है और न व्यय ही वे ध्रौव्य रूप में रहते हैं।

शान्ति – सन्मति! गुण और पर्याय की परिभाषा क्या है?

सन्मति – जो स्वयं में गुण रूप हो किन्तु जिसके अन्य कोई गुण न हो तथा जो वस्तु के सम्पूर्ण अंशों और सभी अवस्थाओं में रहता है उसे गुण कहते हैं।

शान्ति – अरे ....रे....... रे ये अजीब–सी परिभाषा मैं पहली बार ही सुन रहा हूँ लेकिन जिसमें कोई गुण न हो वह गुण कैसे हो सकता है? गुण वस्तु के सर्व अंशों और सर्व अवस्थाओं में कैसे हो सकता है?

सन्मति – देखो! जीव का ज्ञान एक गुण है, किन्तु ज्ञान के कोई गुण नहीं है तथा वह जीव के सर्व प्रदेशों में और उसकी बाल, युवा, वृद्ध आदि सभी अवस्थाओं में रहता है। भैय्या शान्ति! यदि हम शास्त्रों को अच्छी तरह से पढ़ने का प्रयास करें तो वहाँ हर बात का समाधान मिलेगा। कुछ भी अजीब–सा नहीं लगेगा।

धर्म – सन्मति भैय्या! पर्याय किसे कहते हैं?

शान्ति – हाँ! आपने अच्छा प्रश्न किया। पर्याय–गुणों या द्रव्यों के शुद्धाशुद्ध विकार अर्थात् परिणमन को पर्याय कहते हैं।

धर्म – ऐ! द्रव्य या गुणों के क्षणवर्ती परिणमन (परिमाण) को पर्याय कहते हैं।

शान्ति – हाँ! द्रव्य या गुणों के क्षणवर्ती परिणमन या विकार को पर्याय कहते हैं।

धर्म – किन्तु आप 'क्षणवर्ती' शब्द क्यों जोड़ रहे हैं।

शान्ति – पर्याय जो भी होती है वे सभी क्षणवर्ती अर्थात् क्षण-क्षण में बदलने वाली होती है।

सन्मति – किन्तु! आपने द्रव्य या गुणों के विकार अर्थात् परिणमन को पर्याय क्यों कहा? द्रव्य या गुण तो ज्यों के त्यों रहते हैं।

शान्ति – देखो! बिना द्रव्य या गुणों के परिणमन हुये पर्याय नहीं हो सकती। पर्याय कोई अलग वस्तु नहीं है अपितु द्रव्य-गुणों का शुद्धाशुद्ध परिणमन ही पर्याय है और वह द्रव्य से अभिन्न रहती है।

सन्मति – द्रव्यों में परिणमन कैसे होता है?

शान्ति – प्रत्येक द्रव्य के छह सामान्य गुण होते हैं उनमें एक अगुरूलघु गुण होता है, उससे प्रति समय षट् गुणस्थान पतित हानि-वृद्धि होती रहती है तथा वस्तुत्वगुण द्रव्य को कभी एक-सा कूटस्थ नहीं रखता अत: इस कारण से द्रव्य में प्रतिक्षण परिणमन होता रहता है।

धर्म – आपने पर्याय की परिभाषा बताते समय शुद्धाशुद्ध शब्द का प्रयोग किया था इसका क्या तात्पर्य है? क्या पर्यायें भी शुद्धाशुद्ध होती हैं?

शान्ति – हाँ-हाँ पर्यायें भी शुद्धाशुद्ध हैं। लेकिन जब शुद्ध होगी तब अशुद्ध नहीं होती। और जब अशुद्ध होगी तब शुद्ध नहीं होगी। एक समय में एक द्रव्य या गुण की एक ही पर्याय होगी।

धर्म – लेकिन! शुद्धाशुद्ध का तात्पर्य क्या है?

शान्ति – धर्म! संसार में जीव और पुद्गल ये दो द्रव्यों की पर्यायें ऐसी हैं जो शुद्ध भी होती हैं और अशुद्ध भी, इनमें पुद्गल द्रव्य की पर्याय तो शुद्ध से अशुद्ध और अशुद्ध से शुद्ध होती रहती है। किन्तु जीव द्रव्य की पर्याय एक बार शुद्ध हो जाने के पश्चात् फिर कभी अशुद्ध नहीं होती।

धर्म – किन्तु इनकी शुद्धाशुद्ध पर्याय क्यों होती हैं? शुद्ध ही क्यों नहीं होती हैं?

शान्ति – द्रव्यों में अनेक शक्तियाँ होती हैं। उनमें जीव तथा पुद्‌गल में एक ऐसी शक्ति है जिसे वैभाविक शक्ति कहते हैं। इस शक्ति के कारण जब द्रव्य या गुण वैभाविक रूप में परिणमन करता है, तब उसकी विभाव या अशुद्ध पर्याय होती है और जब शुद्ध रूप में परिणमन करता है, तब उसकी स्वाभाविक या शुद्ध पर्याय होती है।

नेमी – भैय्या जी! जो द्रव्य या गुणों में परिणमन होने से पर्याय होती है वह क्रमवर्ती होती है या क्रमबद्ध ?

शान्ति – नेमी ! तुमने बहुत अच्छा प्रश्न किया तुम्हारी बुद्धि की सूक्ष्म पकड़ बहुत अच्छी है। देखो जिनागम में निर्ग्रन्थाचार्यों ने कहीं भी क्रमबद्ध शब्द का प्रयोग नहीं किया अपितु क्रमवर्ती, क्रमभावी या क्रमनियत शब्दों का ही प्रयोग किया है ?

नेमी – इन शब्दों का क्या अर्थ है क्या आप समझायेंगे ?

शान्ति – क्यों नहीं ! अवश्य समझाऊँगा । देखो ! क्रमवर्ती, क्रमभावी और क्रमनियत का अर्थ है- द्रव्य या गुणों में जो भी पर्याय होती है, वह सभी क्रम से होगी। अर्थात् एक के बाद एक, एक ही होगी। एक साथ दो या एक भी नहीं, ऐसा नहीं होगा। यह एक के बाद एक का नियम नियत अर्थात् निश्चित है ! किन्तु इसके बाद यही होगी यह निश्चित नहीं है। क्रमबद्ध का यही अर्थ है कि इसके बाद यह होना किन्तु यह न तो किसी आगम का वाक्य है और न आचार्यों का, उक्त वाक्य में युक्ति और आगम दोनों तरफ से दोष आता है।

सन्मति – इसमें दोष क्या है ?

शान्ति – अविपाक निर्जरा, अकाल मृत्यु, संवर तत्त्व, आस्रव तत्त्व, बंध तत्व आदि में बहुत बड़ी भूल सिद्ध होगी। तीर्थंकर और आचार्यों का धर्मोपदेश तथा साधना, व्रत, नियम, संयम आदि

व्यर्थ सिद्ध होंगे। फिर पाप करने वाले को छोड़ने की कोई आवश्यकता ही न रहेगी।

सन्मति – क्यों ?

शान्ति – क्योंकि ! उसके पाप रूप ही पर्याय का क्रमबंध हैं तथा जिस समय यह क्रम समाप्त हो जाएगा तब पाप छूट जायेंगे इसमें भगवान्, आचार्यों या जिनवाणी आदि के उपदेशों की कोई भी आवश्यकता न होगी और ऐसा मानने पर तीर्थंकरों का उपदेश देना गणधर आदि आचार्यों द्वारा उसको प्रसारित करना सब व्यर्थ होगा। क्योंकि इससे तो कुछ होगा नहीं अपितु जो होना है, सो ही होगा।

धर्म – हाँ भैय्या ! शांति ठीक कह रहे हैं- हाँ ! जो होना है वही होगा इस बात को लेकर बैठ जाएँ मन्दिर जाना, स्वाध्याय करना, पाठशाला में जाना, शिविरों या प्रवचनों में जाने की कोई आवश्यकता ही न होगी। क्योंकि इससे कोई लाभ नहीं होगा। लाभ योग्य पर्याय का जब क्रम आयेगा तभी लाभ होगा। उक्त स्थानों में जाने से नहीं। किन्तु ये सब बातें ठीक नहीं है।

नेमी – सन्मति ! फिर धर्म साधना या अभ्यास करने से भी कोई लाभ या हित नहीं होगा।

सन्मति – तो, क्या ? धर्म करते–करते हित हो जायेगा, अनन्तभव धर्म करते–करते निकल गये।

शान्ति – नहीं ! सन्मति धर्म करते–करते अनन्तभव नहीं निकले। सच पूछो तो अभी एक भी भव धर्म करते नहीं निकला। क्योंकि हमने सत्य रूप से एक भी भव में धर्म की सच्ची और पूर्ण साधना नहीं की। क्योंकि धर्म की सच्ची और पूर्ण साधना का फल निर्वाण है। यदि धर्म किया होता तो आज हम इस संसार में गोते नहीं लगाते रहते तथा दूसरी बात है कि हमारा जब भी हित होगा धर्म करते–करते ही होगा। धर्म के अभाव में नहीं।

सन्मति – लेकिन जब भी हमारा हित होगा तो किसी के कहने या हमारे

आचरण से नहीं। अपितु अपने काल की पर्याय से होगा।

शान्ति – तो फिर आप ही बताओ आपकी इस मान्यता में और नियतिवाद (जो 363 मिथ्या मतों में एक मत है उनमें) में क्या अन्तर हुआ ? दोनों एक हो गये। इसका तात्पर्य आप स्वयं नियतिवादी मिथ्यादृष्टि हो गये।

सन्मति – ऐ ! ऐसा !! हाँ ! तो शान्ति आप सच कह रहे हो, मैं अज्ञानी हूँ अनाड़ी हूँ मैं अभी तक नहीं जानता था और जानने का सत्य प्रयास भी नहीं किया था। इसीलिए आज तक ऐसा मानता रहा कि जो होना होगा सो ही होगा– इससे तो धर्म साधना का पूर्ण अभाव होगा, हित कभी नहीं होगा अर्हन्तों एवं आचार्यों का धर्मोपदेश व्यर्थ होगा और हम नियतिवादी मिथ्यादृष्टि हो जायेंगे।

नेमी – और भी देखो भैया ! ऐसा कहने वाले धर्म साधना करने मात्र के लिए ही इसका एक बहाना करते हैं किन्तु व्यवहारिकता में उल्टी ही स्थिति दिखती है, फिर वे भोजन क्यों करते हैं ? क्यों नहीं कहते कि पेट भरना होगा सो भर जाएगा। व्यापार क्यों करते हैं ? क्यों नहीं कहते कि पैसा आना होगा तब आयेगा।

धर्म – तिजोड़ी में ताला क्यों लगाते है ? क्यों नहीं सोचते चोरी होनी होगी तो हो जाएगी।

नेमी – अरे ! दुकान में या मकान में कुत्ता घुस जाए जो क्यों भगाते ? क्यों नहीं सोचते इसको खाना ही होगा तो खा लेने दो। बीमार होने पर दवा क्यों लेते हैं ? कपड़े क्यों धोते हैं ? इत्यादि। निश्चित ही यह सिद्धान्त अधूरा है।

सन्मति – भैय्या शान्ति ! हमें द्रव्य की परिभाषा (आपकी उक्त बात) अच्छी तरह से समझ में आ गयी। किन्तु द्रव्य कितने और कौन–कौन से हैं ?

शान्ति – देखो ! संख्या की अपेक्षा तो द्रव्य अनन्त है। किन्तु प्रकार–भेद की अपेक्षा उसके मुख्य 6 भेद हैं। जीव द्रव्य, पुद्गल द्रव्य, धर्म द्रव्य, अधर्म द्रव्य, आकाश द्रव्य और काल द्रव्य।

सन्मति – तो क्या ? जो प्राणी धर्म करता है वह धर्म द्रव्य और जो धर्म नहीं करता है वह अधर्म द्रव्य है ?

शान्ति – नहीं ! नहीं !! यहाँ करने-धरने की बात नहीं अपितु छः द्रव्यों में ये दोनों द्रव्य स्वतंत्र हैं। यह लक्षण ही धर्म, अधर्म से अलग है।

नेमी – तो छहों द्रव्यों के लक्षण क्या हैं उनकी विशेषता क्या है भैय्या ? इसे समझाओ।

शान्ति – ध्यान से सुनो :-

जीव द्रव्य – जिसमें ज्ञान-दर्शन आदि गुण पाए जाते हैं उसे जीव द्रव्य कहते हैं। जीव द्रव्य संख्या से अनंतानंत है। ये सभी लोकाकाश में स्थित है तथा प्रत्येक जीव असंख्यात प्रदेशी है।

पुद्गल द्रव्य – जिसमें स्पर्श, रस, गंध और वर्ण ये चार मुख्य गुण पाए जाते हैं उसे पुद्गल कहते हैं। यह संख्या की अपेक्षा से संपूर्ण जीव राशि से भी अनंत गुणें हैं। लोकाकाश में ही इनका अस्तित्त्व है तथा संख्यात, असंख्यात और अनंतप्रदेशी है।

धर्म द्रव्य– जो जीव और पुद्गल के चलने में उदासीन सहकारी (सहायक) होता है। जैसे – मछली के चलने में जल सहायक होता है। वैसे ही जीव और पुद्गल को स्थान से स्थानान्तरण होने में धर्म द्रव्य सहायक होता है। यह एक अखण्ड द्रव्य है। लोकाकाश में स्थित है तथा असंख्यात, प्रदेशी है।

अधर्म द्रव्य – जो जीव और पुद्गलों को रूकने में उदासीन सहायक होता है उसे अधर्म द्रव्य कहते हैं। जैसे- थके राहगीर को वृक्ष की छाया। यह भी अखण्ड और एक द्रव्य है। लोकाकाश में स्थित है और असंख्यात प्रदेशी है।

आकाश द्रव्य – जो द्रव्य छहों द्रव्यों को (अवगाहन) हेतु स्थान देता है, उसे आकाश द्रव्य कहते हैं। यह अखण्ड और एक द्रव्य है। सारे विश्व में व्याप्त है और अनंत प्रदेशी है।

काल द्रव्य – जो द्रव्य वर्तना लक्षण वाला है तथा घड़ी–घंटा आदि की मर्यादा को बताता है, वह काल द्रव्य है। जो संख्या से असंख्यात है। लोकाकाश में स्थित है तथा एक प्रदेशी है।

धर्म – द्रव्य क्या मात्र 6 ही होते है ? इससे कम या अधिक नहीं होते हैं ?

शान्ति – हाँ ! द्रव्य प्रकार की अपेक्षा छह ही होते हैं। इससे कम या अधिक नहीं होते हैं।

नेमी – आपने धर्म एवं अधर्म द्रव्य के लक्षण बताते हुए ''उदासीन'' शब्द कहा था। इसका क्या तात्पर्य है ?

शान्ति – उदासीन का तात्पर्य यह है कि, जो स्वयं चलते हुए जीव और पुद्गल को अप्रेरक रूप से सहयोगी होता है अर्थात् जबरदस्ती चलाता या रोकता नहीं है उसे उदासीन कहते हैं।

सन्मति – ये सभी द्रव्य क्या सम्पूर्ण आकाश में रहते हैं ?

शान्ति – नहीं ! नहीं !! नहीं !!! ये सभी द्रव्य सम्पूर्ण आकाश में नहीं अपितु लोकाकाश में रहते हैं ?

नेमी – लोकाकाश किसे कहते हैं ?

शान्ति – आकाश के जितने हिस्से में जीवादि छहों द्रव्य पाये जाते हैं उसे लोकाकाश कहते हैं। लोकाकाश सम्पूर्ण आकाश के मध्य में होता है तथा ये असंख्यात प्रदेशी होता है।

धर्म – लोकाकाश के बाहर क्या कोई भी द्रव्य नहीं होते हैं ?

शान्ति – हाँ ! लोकाकाश के बाहर मात्र एक आकाश द्रव्य ही होता है और नहीं। अचानक गुरुजी का आगमन सभी छात्र खड़े होकर–प्रणाम गुरुजी !

गुरुजी – छात्रों ! आज किस विषय पर चर्चा हो रही है।

शान्ति – आज आचार्य श्री ने 'द्रव्य' पर प्रवचन दिये थे। बस उसी के विषय में चर्चा चल रही है।

सन्मति – गुरुजी ! असंख्यात प्रदेशी लोकाकाश में उतने ही प्रदेशी अनंतजीव तथा अनंतानंत पुद्गल द्रव्य कैसे समा जाते हैं।

गुरुजी – यही तो उसकी विशेषता है। इसी को अवगाहना शक्ति कहते हैं। जैसे – एक ग्लास में जितनी राख भर सके ठोक-ठोक कर इस तरह से भरें जिससे वह किंचित भी खाली न रह जाये फिर उसमें आसते-आसते ऊँटनी का दूध भर दें और फिर उसमें जितनी सुई गपा सके गपा दें। एक ही ग्लास में यह सब कुछ समा जाता है इसी तरह एक ही लोकाकाश में अनेक द्रव्य समाए हुए हैं।

सन्मति – गुरु जी ! ये द्रव्य कब से हैं और कब तक रहेंगें ?

गुरुजी – बेटा ! ये सभी द्रव्य अनादि काल से हैं। इनका कोई प्रारम्भ नहीं है और इनका कभी अन्त भी नहीं आएगा। इसलिए अनंत है।

धर्म – लेकिन ! कभी तो किसी ने बनाया होगा ?

गुरुजी – नहीं ! नहीं !! ऐसा नहीं जब मैंने पहले ही बता दिया कि सभी द्रव्य आजाद हैं। इसी से अर्थ निकल आता है कि, द्रव्यों का कोई प्रारम्भ काल नहीं है। ये प्राकृतिक अपने-अपने स्वभाव से स्वाभाविक हैं, फिर इनका बनाने वाला कौन होगा ? अर्थात् कोई नहीं।

धर्म – गुरु जी ! हम छः द्रव्यों को अच्छी तरह से समझ गए।

सन्मति – गुरुजी ! आपने हम लोगों पर बड़ा उपकार किया। हम आपके इस उपकार के लिए सदा ऋणी रहेंगे।

नेमी – गुरुजी ! हम लोग अब कभी भी आपका यह उपकार नहीं भूलेंगे।

गुरुजी – शाबास ! बेटो ! तुम लोगों की इसी तरह जिज्ञासा बढ़ती रहे और आप लोग वस्तु तत्त्व को समझते हुए सिद्धान्त की गहराइयों में उतरते हुए अपने जीवन को पावन बनाते रहें, यही मेरी हार्दिक भावना है। आप जैसे शिष्यों को पाकर हम अपने आपको गौरवशाली मानते हैं।

(सभी नमस्कार करते हुए एक ही स्वर में) प्रमाण ! गुरुजी !

गुरुजी – तुम सब का कल्याण हो।

❖ ❖ ❖

छह द्रव्य

गोल बॉल गोल दुनिया नहीं गोल।
खोल खोल खोल जैनागम को खोल।।
वो तो थाली जैसी गोल।
छह द्रव्यों का मेल-जोल।।
पहला द्रव्य-जीव कहलाता।
ज्ञाता दृष्टा लक्षण लाता।।
दूसरा द्रव्य-पुद्गल कहलाता।
स्पर्श, रस, गंध वर्ण दर्शाता।।
तीसरा द्रव्य-धर्म कहलाता।
जीव पुद्गलों को चलाता।।
चौथा द्रव्य-अधर्म कहलाता।
जीव पुद्गलों को ठहराता।।
पाँचवा द्रव्य-आकाश कहलाता।
सब द्रव्यों को स्थान प्रदाता।।
छटवाँ द्रव्य-काल कहलता।
घड़ी सेकंड का ज्ञान कराता।।
ये सब द्रव्य करें उपकार।।
इनका ही समूह संसार।।

❖ ❖ ❖

6. श्रावकों के भेद

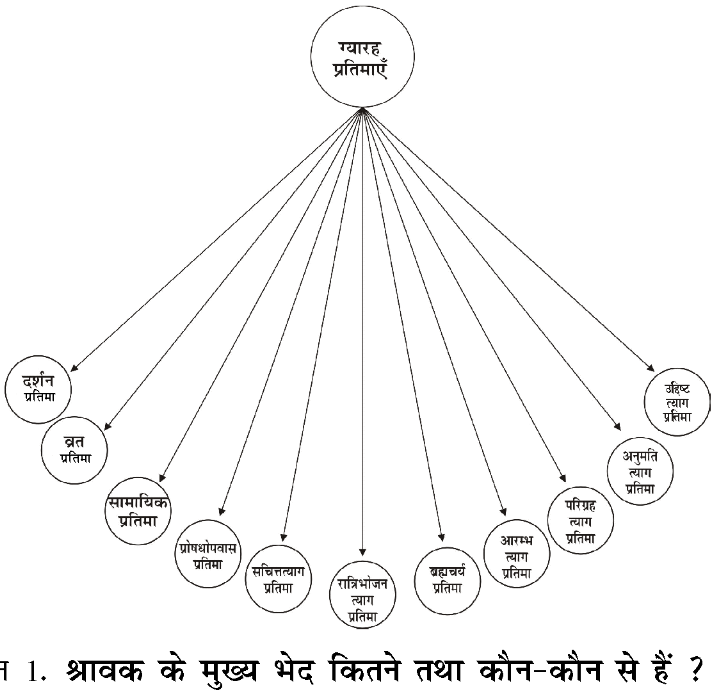

प्रश्न 1. **श्रावक के मुख्य भेद कितने तथा कौन-कौन से हैं ?**

उत्तर : श्रावक के मुख्य तीन भेद हैं –
1. पाक्षिक, 2. नैष्ठिक, 3. साधक।

प्रश्न 2. **पाक्षिक श्रावक किसे कहते हैं ?**

उत्तर : अष्टमूल गुण धारण रूप पक्ष जिसका है तथा जो अभ्यास रूप से श्रावक धर्म का पालन करता है, उसे पाक्षिक (प्रारब्ध) श्रावक कहते हैं।

प्रश्न 3. **नैष्ठिक श्रावक किसे कहते हैं ?**

उत्तर : जो श्रावक धर्म का श्रद्धापूर्वक निरतिचार रूप से पालन करता है, उसे नैष्ठिक (देशसंयमी) श्रावक कहते हैं।

प्रश्न 4. **श्रावक धर्म क्या है ?**

उत्तर : सप्त व्यसन त्याग, अष्टमूलगुण, षट् आवश्यक कर्तव्य, बारह व्रत एवं प्रतिमा का पालन करना श्रावक धर्म है।

प्रश्न 5. **प्रतिमा किसे कहते हैं ?**

उत्तर : ध्यान से सुनो - **संयम अंश जगो जहाँ, भोग अरूचि परिणाम।**
उदय प्रतिज्ञा को भयो, प्रतिमा ताको नाम॥

संसार, शरीर और भोगों से वैराग्य उत्पन्न होने पर संयम ग्रहण करने के परिणाम होते हैं। उस समय श्रावक धर्म पालने की जो प्रतिज्ञा (व्रत) ली जाती है, उसे प्रतिमा कहते हैं।

प्रश्न 6. **प्रतिमा के कितने भेद हैं एवं वे कौन-कौन से हैं ?**

उत्तर : प्रतिमा के 11 भेद हैं। यथा (1) दर्शन प्रतिमा (2) व्रत प्रतिमा (3) सामायिक प्रतिमा (4) प्रोषधोपवास प्रतिमा (5) सचित्त त्याग प्रतिमा (6) रात्रि-भुक्ति त्याग या दिवा-मैथुन त्याग प्रतिमा (7) ब्रह्मचर्य व्रत प्रतिमा (8) आरम्भ-त्याग प्रतिमा (9) परिग्रह - त्याग प्रतिमा (10) अनुमति-त्याग प्रतिमा (11) उद्दिष्ट-त्याग प्रतिमा ये श्रावक धर्म की ग्यारह सीढ़ियाँ हैं। जो प्रतिमाओं के नाम से जानी जाती है।

प्रश्न 7. **ग्यारह प्रतिमा धारियों में उत्तम, मध्यम, जघन्य भेद गिनाओं ?**

उत्तर : ग्यारह प्रतिमाओं में पहली प्रतिमा से छठवीं प्रतिमा तक 1, 2,3,4,5,6 छह प्रतिमाधारी जघन्य श्रावक कहलाते हैं, सातवीं प्रतिमा से लेकर नवमीं प्रतिमा तक मध्यम श्रावक कहलाते हैं तथा दशमी, ग्यारहवीं प्रतिमाधारी श्रावक उत्तम श्रावक कहलाते हैं।

प्रश्न 8. **दर्शन प्रतिमा किसे कहते हैं ?**

उत्तर : पच्चीस दोषों से रहित निरतिचार, सम्यग्दर्शन का पालन, संसार-शरीर भोगों से उदासीनता, पाँच परमेष्ठियों की ही शरण तथा अष्टमूल गुणों के धारण करने की प्रतिज्ञा लेने को दर्शन प्रतिमा कहते हैं।

प्रश्न 9. **व्रत प्रतिमा किसे कहते है ?**

उत्तर : तीन शल्य रहित होकर श्रावक के बारह व्रतों को धारण करने की प्रतिज्ञा करने को व्रत प्रतिमा कहते हैं।

प्रश्न 10.**शल्य किसे कहते हैं तथा वे कितनी होती हैं ?**

उत्तर : जो कांटे की तरह निरन्तर हृदय में चुभती है, उसे शल्य कहते हैं।

प्रश्न 11.**शल्य के भेदों को गिनाते हुए उनके अर्थ को समझाइए ?**

उत्तर : शल्य के मुख्य तीन भेद हैं- 1. माया, 2. मिथ्यात्व, 3. निदान।

1. **माया शल्य** - मन में कुछ, वचन में कुछ तथा शरीर के द्वारा अन्य ही चेष्टा कर दूसरों को ठगने को माया शल्य कहते हैं।

2. **मिथ्यात्व शल्य**- अतत्त्व श्रद्धान या तत्त्व के विपरीत श्रद्धान को मिथ्यात्व शल्य कहते हैं।

3. **निदान शल्य** - आगामी भोगों की इच्छा करने को निदान शल्य कहते हैं।

प्रश्न 12. **सामायिक प्रतिमा किसे कहते हैं ?**

उत्तर : चारों दिशाओं में 3-3 आवर्त 1-1 प्रणाम करके निर्विकार रूप हो, शरीरस्थ परिग्रह एवं काल का प्रमाण करके, आसन को स्थिर कर, तीनों समय सामायिक करने को सामायिक प्रतिमा कहते हैं।

प्रश्न 13. **प्रोषधोपवास प्रतिमा किसे कहते हैं ?**

उत्तर : अष्टमी चतुर्दशी के दिन उपवास, इसके एक दिन पूर्व सप्तमी एवं त्रयोदशी के दिन एकाशन तथा उपवास के दूसरे दिन (नवमी एवं पूर्णमासी, अमावस्या के दिन) भी एकाशन करने को अर्थात् दो एकाशन के बीच एक उपवास करने को प्रोषधोपवास कहते हैं।

प्रश्न 14. **सचित्त-त्याग प्रतिमा किसे कहते हैं ?**

उत्तर : भोज्य एवं पेय सामग्री को प्रासुक करके खाने को सचित्त-त्याग प्रतिमा कहते हैं।

प्रश्न 15. **रात्रिभुक्ति-त्याग प्रतिमा किसे कहते हैं ?**

उत्तर : मन-वचन-काय, कृत-कारित-अनुमोदना आदि से रात्रि में भोजन के त्याग को रात्रिभुक्ति-त्याग प्रतिमा कहते हैं।

प्रश्न 16. **रात्रि भोजन का त्याग तो पहली ही प्रतिमा में हो गया था। फिर इस प्रतिमा का क्या प्रयोजन है ?**

उत्तर : पहली प्रतिमा में रात्रि में स्वयं भोजन करने का त्याग किया था, कराने एवं अनुमोदन का त्याग नहीं किया था, किन्तु यहाँ पर उसका भी त्याग किया जाता है। यही इस प्रतिमा की विशेषता है। इस प्रतिमा का दूसरा नाम दिवामैथुन-त्याग भी है।

प्रश्न 17. **दिवामैथुन-त्याग किसे कहते हैं ?**

उत्तर : दिन में स्वस्त्री से विषय सेवन के त्याग को दिवामैथुन-त्याग कहते हैं।

प्रश्न 18. **ब्रह्मचर्यव्रत-प्रतिमा किसे कहते हैं।**

उत्तर : विषयों के सेवन से विरक्त हो, स्त्री मात्र के त्याग को ब्रह्मचर्यव्रत-प्रतिमा कहते हैं।

प्रश्न 19. **आरम्भत्याग-प्रतिमा किसे कहते हैं ?**

उत्तर : समस्त व्यापार एवं गृहस्थी विषयक कार्यों के त्याग को आरम्भत्याग-प्रतिमा कहते हैं।

प्रश्न 20. **क्या आरम्भत्याग-प्रतिमा धारी रसोई बना सकता है?**

उत्तर : हाँ ! अत्यावश्कता पड़ने पर स्वयं के लिए या पात्र दान के लिए रसोई बना सकता है।

प्रश्न 21. **परिग्रहत्याग-प्रतिमा किसे कहते हैं ?**

उत्तर : अत्यावश्यक वस्तुओं को छोड़ अर्थात् जो जीवन निर्वाह के लिए अत्यन्त आवश्यक है, उनके अतिरिक्त शेष सभी वस्तुओं के त्याग को परिग्रहत्याग-प्रतिमा कहते हैं।

प्रश्न 22. **अनुमतित्याग-प्रतिमा किसे कहते हैं ?**

उत्तर : आरम्भ और गृहस्थी विषयक प्रश्नों पर स्वीकृति देने के त्याग को अनुमतित्याग-प्रतिमा कहते हैं।

प्रश्न 23. उद्दिष्टत्याग-प्रतिमा किसे कहते हैं ?

उत्तर : घर–गृहस्थी का त्याग कर, गुरुओं के चरण (सानिध्य) में रह मुनि व्रत का अभ्यास करते हुए स्वयं के उद्देश्य से बने हुए आहार आदि के त्याग को उद्दिष्टत्याग–प्रतिमा कहते हैं।

प्रश्न 24. उद्दिष्टत्याग-प्रतिमा धारी के कितने भेद हैं ?

उत्तर : उद्दिष्टत्याग प्रतिमाधारी उत्कृष्ट श्रावक के दो भेद हैं –
1. क्षुल्लक 2. ऐलक

प्रश्न 25. क्षुल्लक किसे कहते हैं ?

उत्तर : ग्यारह प्रतिमाओं को धारण करने वाले गृहत्यागी, भिक्षावृत्ति से आहार करने वाला, गुरु चरणों में रहने वाला, लंगोटी एवं खण्ड वस्त्रधारी को क्षुल्लक कहते हैं।

प्रश्न 26. खण्ड वस्त्र किसे कहते हैं ?

उत्तर : चादर को खण्ड वस्त्र कहते हैं किन्तु वह इतना ही बड़ा होना चाहिए कि, सिर ढ़के तो पैर न ढ़क सके या पैर ढ़के तो सिर न ढ़क सके, उसे खण्ड वस्त्र कहते हैं।

प्रश्न 27. वस्त्र भी रखा जावे, वो भी खण्ड रूप से ऐसा क्यो ?

उत्तर : यह वस्त्र उनको आराम या सजावट के लिए नहीं है अपितु मुनि बनने हेतु निर्वस्त्र होने का अभ्यास है।

प्रश्न 28. ऐलक किसे कहते हैं ?

उत्तर : जो उपरोक्त गुणों के साथ–साथ खण्ड वस्त्र (चादर) का भी त्याग करते हैं। मात्र एक कोपीन (लंगोटी) ही पहिनते हैं उन्हें ऐलक कहते हैं।

प्रश्न 29. ऐलक और क्षुल्लक में उक्त अन्तर के अलावा और क्या अन्तर हैं ?

उत्तर : ऐलक केशलुंचन करते हैं, हाथ में आहार लेते हैं, पैदल यात्रा करते हैं, रात्रि में मौन रहने की साधना करते हैं, किन्तु क्षुल्लक के इन गुणों का कोई नियम नहीं रहता, वे उक्त गुणों का पालन करते भी हैं और नहीं भी करते।

प्रश्न 30. **श्रावक धर्म पालने का मुख्य प्रयोजन क्या है ?**

उत्तर : श्रावक धर्म पालने का मुख्य प्रयोजन धर्म की अभिवृद्धि करते हुए, मुनिव्रत धारण कर यथार्थ साधना कर, कल्याण पथ, की प्राप्ति करना है।

प्रश्न 31. **जब मुनि व्रत धारण ही करना पड़ता है तो फिर ग्यारह प्रतिमा रूप श्रावक धर्म क्यों कहा ? उसे तो सीधा ही मुनि बनना चाहिए।**

उत्तर : आपका कहना ठीक है। यदि योग्यता हो और गुरु आज्ञा हो तो ऐसा ही करना चाहिए। किन्तु यदि मुनिव्रत का अभ्यास नहीं है तो उक्त व्रतों को धारण कर मुनि बनने का पूर्ण अभ्यास करना चाहिए। तत्पश्चात् मुनिव्रत धाारण करना चाहिए।

प्रश्न 32. **अभ्यास के बिना क्या मुनिव्रत पालन हो सकता है ?**

उत्तर : यदि संहनन शक्ति हो तो बिना अभ्यास किये भी गुरु चरणों में रहकर निर्दोष मुनिव्रत का पालन हो सकता है।

प्रश्न 33. **यदि कोई व्यक्ति ऐलक या क्षुल्लक बन जाय और उसे मुनिव्रत की साधना कठिन प्रतीत हो तो उसे क्या करना चाहिए ?**

उत्तर : उसे उसी ऐलक या क्षुल्लक की अवस्था में रहते हुये, मुनि व्रत का अभ्यास करना चाहिये और जीवन की अन्तिम घड़ियों में सल्लेखना पूर्वक (समाधिपूर्वक) मरण को सिद्ध करना चाहिए।

प्रश्न 34. **सल्लेखना किसे कहते हैं?**

उत्तर : पर पदार्थों से मोह–ममता को हटाकर, कषाय और शरीर को कृश करते हुए, धर्म ध्यान की वृद्धि करते हुए प्राण विसर्जन को सल्लेखना कहते हैं।

प्रश्न 35. **सल्लेखना पूर्वक मरण करने वाला श्रावक अधिक से अधिक कहाँ तक जा सकता है?**

उत्तर : सल्लेखना पूर्वक मरण करने से श्रावक अधिक से अधिक सोलहवें स्वर्ग तक जा सकता है और वहाँ से आकर मनुष्य हो, मुनिव्रत धारण कर मोक्ष भी जा सकता है। ❖ ❖ ❖

श्रावकों के भेद

श्रावक धर्म

सप्त व्यसन आजीवन तजना
अष्ट मूलगुण से तुम सजना
षट् आवश्यक पालन करना
बारह व्रत, ग्यारह प्रतिमा धरना
यह श्रावक का धर्म कहाये
सौधर्म आदि पद दिलाये
आगे मुनिव्रत धरता है
श्रावक वह भव से तिरता है।।

श्रावकों के भेद

श्रद्धा, विवेक, क्रियायुक्त जो
श्रावक उसका नाम बताया
पाक्षिक नैष्ठिक, साधक ऐसे
तीन भेद में गया गिनाया
अष्ट मूलगुण का ही धारी
पाक्षिक संज्ञा का अधिकारी
श्रावक धर्म हो निरतिचार
नैष्ठिक श्रावक है होनहार
करें सल्लेखना की साधना
साधक उसका नाम जानना
ये तीनों श्रावक कहलाये
देवराज भी शीश झुकायें।

प्रतिमा

भव तन भोग असार लगे
संयम का जब अंश जगे
श्रावक-धर्म की ले प्रतिज्ञा
उसका नाम कहा है प्रतिमा
पहली दर्शन प्रतिमा है
दूसरी व्रत प्रतिमा है
तीसरी है सामायिक प्रतिमा
चौथी प्रोषधोषवास प्रतिमा
पाँचवी है शक्तिः त्याग
छटवीं रात्रि भुक्ति त्याग
सातवीं ब्रह्मचर्य प्रतिमा है
आठवीं हैआरंभ त्याग
नवमीं परिग्रह त्याग है
दसवीं अनुमति त्याग है
ग्यारहवीं उद्दिष्ट त्याग प्रतिमा
ऐलक क्षुल्लक भेद जानना।।

❖ ❖ ❖

7. कर्म-प्रकृतियाँ

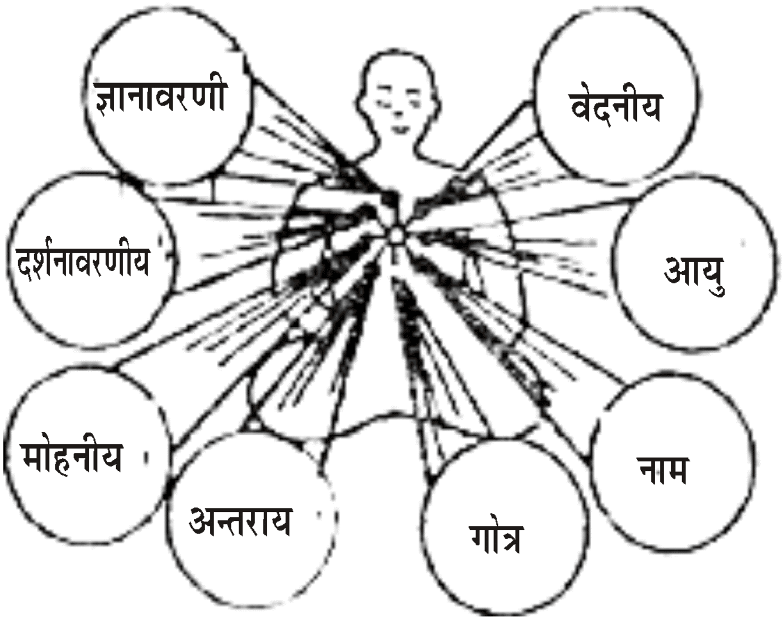

प्रश्न 1. **कर्म किसे कहते हैं?**

उत्तर : जो आत्मा को दुख देते है, उसे कर्म कहते हैं।

प्रश्न 2. **कर्म के कितने भेद हैं?**

उत्तर : कर्म के मुख्य तीन भेद हैं-द्रव्य-कर्म, भाव-कर्म और नो-कर्म।

प्रश्न 3. **द्रव्यकर्म किसे कहते हैं?**

उत्तर : ज्ञानवरणादि आठ कर्मों के जो कर्म परमाणु हैं उसे द्रव्यकर्म कहते हैं।

प्रश्न 4. **भावकर्म किसे कहते हैं?**

उत्तर : जीव के जो राग–द्वेष रूप परिणाम होते हैं, उसे भाव–कर्म कहते हैं।

प्रश्न 5. **नोकर्म किसे कहते हैं?**

उत्तर : तीन शरीर (औदारिक, वैक्रियिक, आहारक) और छह पर्याप्तियों (आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास, भाषा और मन) को नोकर्म कहते हैं।

प्रश्न 6. **द्रव्यकर्म और भावकर्म में क्या अन्तर है?**

उत्तर : द्रव्यकर्म और भावकर्म में कार्य–कारण सम्बन्ध है। ये परस्पर में एक दूसरे के कारण भी हैं और कार्य भी हैं।

प्रश्न 7. **ज्ञानावरणादि आठ कर्मों के नाम बताओ?**

उत्तर : ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र और अन्तराय।

प्रश्न 8. **ज्ञानावरणीय कर्म किसे कहते हैं?**

उत्तर : जो कर्म आत्मा के ज्ञान गुण को प्रकट नहीं होने देता, उसे ज्ञानावरणीय कर्म कहते हैं।

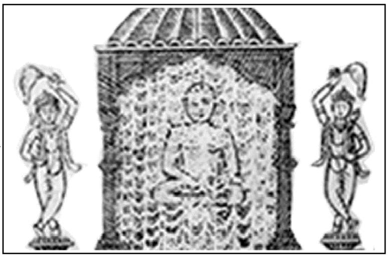

प्रश्न 9. **ज्ञानावरणीय कर्म को दृष्टान्त देकर समझाइये?**

उत्तर : जैसे : प्रतिमा पर कपड़ा (पट) डाल दिया जाए तो प्रतिमा का ज्ञान नहीं होता। वैसे ही ज्ञानावरणीय कर्म जीव के ज्ञान गुण को प्रकट नहीं होने देता।

प्रश्न 10. **ज्ञानावरणीय कर्म के कितने भेद हैं?**

उत्तर : ज्ञानावरणीय कर्म के 5 भेद हैं–मतिज्ञानावरण, श्रुतज्ञानावरण, अवधि ज्ञानावरण, मन:पर्ययज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण।

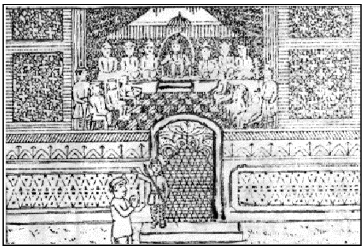

प्रश्न 11. **दर्शनावरणीय कर्म किसे कहते हैं?**

उत्तर : दर्शनावरणीय कर्म आत्मा के दर्शन गुण को प्रकट नहीं होने देता।

प्रश्न 12. **दर्शनावरण कर्म को दृष्टान्त द्वारा समझाइये?**

उत्तर :- जैसे : कोई द्वारपाल राजा के दर्शन को आये दर्शनार्थियों को दरवाजे पर ही रोक देता है तथा राजा के दर्शन नहीं करने देता। उसी प्रकार दर्शनावरणीय कर्म जीव के दर्शन गुण को प्रकट नहीं होने देता।

प्रश्न 13.**दर्शनावरणीय कर्म के कितने भेद हैं?**

उत्तर : दर्शनावरणीय कर्म के नौ भेद हैं- चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण, अवधिदर्शनावरण, केवलदर्शनावरण, निद्रा दर्शनावरण, निद्रा-निद्रा दर्शनावरण, प्रचला दर्शनावरण, प्रचला-प्रचला दर्शनावरण, स्त्यानगृद्धि दर्शनावरण।

प्रश्न 14.**वेदनीय कर्म किसे कहते हैं?**

उत्तर : जिस कर्म के उदय से सुख-दुख का वेदन होता है। उसे वेदनीय कर्म कहते हैं।

प्रश्न 15. **वेदनीय कर्म को दृष्टान्त पूर्वक समझाइये?**

उत्तर : तीक्ष्ण तलवार की धार पर लगी शहद को जीभ से चाटने पर जिस प्रकार सुख-दुख का एक साथ अनुभव होता है। उसी प्रकार वेदनीय कर्म से अनुभव होता है।

प्रश्न 16. **वेदनीय कर्म के कितने भेद हैं?**

उत्तर : वेदनीय कर्म के मुख्य दो भेद हैं- सातावेदनीय और असातावेदनीय।

प्रश्न 17.**मोहनीय कर्म किसे कहते हैं?**

उत्तर : जिस कर्म के उदय से जीव अपनी सुध-बुध भूलकर मोह को प्राप्त होता हैं। उसे मोहनीय कर्म कहते हैं।

प्रश्न 18.**मोहनीय कर्म को दृष्टान्त द्वारा समझाइये?**

उत्तर : शराब पीने पर जिस प्रकार शराबी अपनी सुध-बुध भूलकर भ्रमित-सा हो जाता है। उसी प्रकार मोहनीय कर्म के उदय से जीव हित-अहित भूल जाता है।

प्रश्न 19. **मोहनीय कर्म के कितने भेद हैं?**

उत्तर : मोहनीय कर्म के दो भेद हैं- दर्शन मोहनीय, चारित्र मोहनीय।

प्रश्न 20. **दर्शन मोहनीय किसे कहते हैं?**

उत्तर : जो कर्म जीव के सम्यग्दर्शन गुण को ढ़ाकता है- सम्यग्दर्शन नहीं होने देता, उसे दर्शन मोहनीय कहते हैं।

प्रश्न 21.**चारित्र मोहनीय कर्म किसे कहते हैं?**

उत्तर : जो कर्म जीव के चारित्र गुण को ढ़ाकता है- सम्यक्चारित्र नहीं होने देता है, उसे चारित्र मोहनीय कहते हैं।

प्रश्न 22.**आयु कर्म किसे कहते हैं?**

उत्तर : जिस कर्म से जीव किसी न किसी गति में निश्चित समय तक रूका रहता है, उसे आयु कर्म कहते हैं।

प्रश्न 23.**आयुकर्म को दृष्टान्त पूर्वक समझाइये?**

उत्तर : जैसे : बन्दी-गृह (जेल) में पड़ा हुआ कैदी बेवस-सा रहकर समय गुजारता है। तथैव आयु कर्म से आबद्ध जीव उसी पर्याय के समय को पूरा करता है।

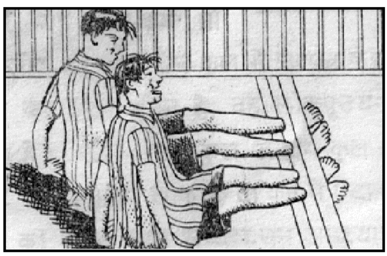

प्रश्न 24. **आयुकर्म के कितने भेद हैं?**

उत्तर : आयुकर्म के चार भेद हैं- देव-आयु, मनुष्य-आयु, तिर्यञ्च-आयु और नरक-आयु।

प्रश्न 25. **नाम कर्म किसे कहते हैं?**

उत्तर : जिस कर्म के उदय से शरीर की नाना प्रकार से रचना होती है, उसे नाम कर्म कहते हैं।

प्रश्न 26. **नाम कर्म को दृष्टांत पूर्वक समझाइये।**

उत्तर : जिस प्रकार चित्रकार अनेक प्रकार के चित्र बनाता है। उसी प्रकार

नाम कर्म संसारी प्राणियों के विभिन्न प्रकार के आकार (शरीर) बनाता है। जैसे : देव, नारकी, मनुष्य, ऊँचा, ठिगना, लम्बा, सुन्दर, कुरूप, आदि।

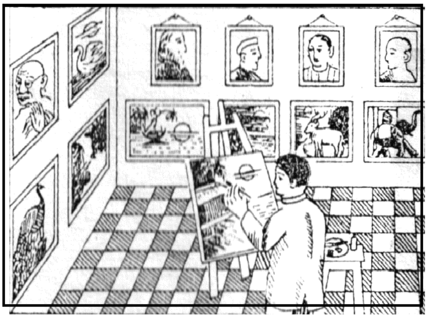

प्रश्न 27. **नाम कर्म के कितने भेद हैं?**

उत्तर : नाम कर्म के मुख्य 42 भेद हैं। उत्तर भेद 93 हैं।

प्रश्न 28. **गोत्र कर्म किसे कहते हैं?**

उत्तर : जिस कर्म के उदय से जीव ऊँच-नीच कुलों में जन्म लेता है, उसे गोत्र कर्म कहते हैं।

प्रश्न 29. **गोत्र कर्म के मुख्य भेद कितने हैं?**

उत्तर : गोत्र कर्म के मुख्य दो भेद हैं - उच्च गोत्र, नीच गोत्र।

प्रश्न 30. **गोत्र कर्म को दृष्टान्त पूर्वक समझाइये?**

उत्तर : लोक पूजित उच्चकुल जैन समाज में जन्म लेना उच्च गोत्र कहलाता है। मांस-मदिरा बेचने वाले- मल-मूत्र साफ करने वाले नीच कुल में जन्म नीच गोत्र है। जैसे : कुम्भकार छोटे बड़े बर्तन बनाता है।

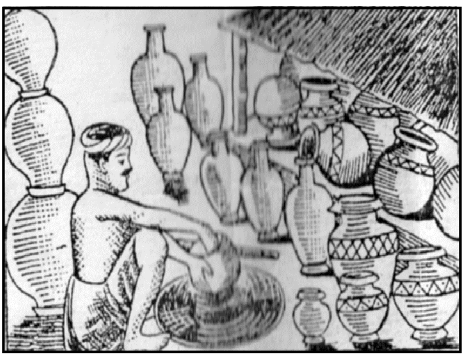

प्रश्न 31. **अन्तराय कर्म किसे कहते हैं?**

उत्तर : अन्तराय का अर्थ है विघ्न या बाधा डालना। जिस कर्म के उदय से कार्य निर्विघ्न पूर्ण न हो सके! सुख-शांति, भोगोपभोग की सामग्री प्राप्त न हो सके, उसे अन्तराय कर्म कहते हैं।

प्रश्न 32. अन्तराय कर्म को दृष्टान्त पूर्वक समझाइये?

उत्तर : जैसे : सेठ ने भण्डारी से किसी को सौ रूपया देने को कहा किन्तु भण्डारी मालिक को दान देने से रोकता है। उसी प्रकार अन्तराय कर्म प्राणी को भोगोपभोग सामग्री की प्राप्ति में, सुख प्राप्ति के उपाय में विघ्न डाल देता है। उसे वस्तु की प्राप्ति नहीं होने देता।

प्रश्न 33. अन्तराय कर्म के कितने भेद हैं?

उत्तर : अन्तराय कर्म के पाँच भेद हैं- दानान्तराय, लाभान्तराय भोगान्तराय, उपभोगान्तराय और वीर्यान्तराय।

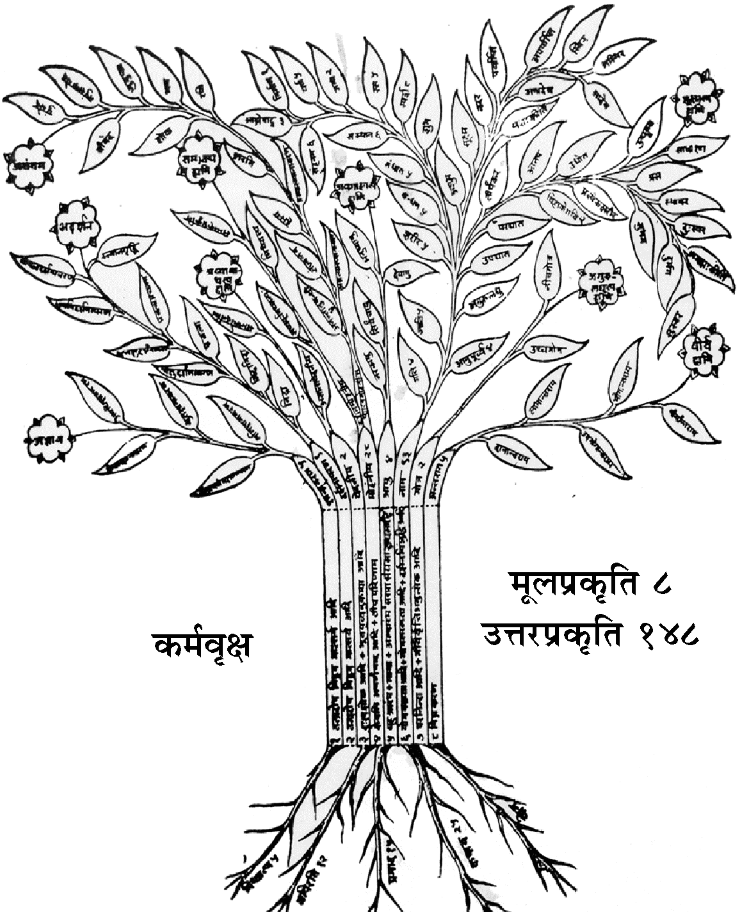

प्रश्न 34. **क्या इन आठ कर्मों का और भी विभाजन संभव है?**

उत्तर : हाँ! इन आठ कर्मों को घातिया–अघातिया इन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

प्रश्न 35. **घातिया और अघातिया में कौन-कौन कर्म है?**

उत्तर : घातिया कर्म चार हैं- ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय। अघातिया कर्म चार हैं- वेदनीय, आयु, नाम और गोत्र।

प्रश्न 36. **इन्हें घातिया और अघातिया क्यों कहते हैं?**

उत्तर : घातिया कर्म जीव के प्रमुख या अनुजीवी गुणों का घात करते हैं। ये महाप्रबल हैं, इसलिये ये घातिया कहे जाते हैं तथा अघातिया कर्म आत्मा के प्रतिजीवीगुणों का घात करते है इसलिये उन्हें अघातिया कहते हैं।

प्रश्न 37. **कर्मों के क्षय से क्या लाभ हैं?**

उत्तर : कर्मों के क्षय से मोक्ष प्राप्त होता है। जीव को जीवन–मरण के दु:खों से छुटकारा मिल जाता है।

प्रश्न 38. **इस पाठ को पढ़ने से क्या शिक्षा मिलती है?**

उत्तर : इस पाठ को पढ़ने से मालूम हुआ कि संसार में कर्म के कारण दुख है और हमें सदा कर्म से छुटकारा पाने की चेष्टा करनी चाहिए। ❖ ❖ ❖

कर्म

जो हमको दु:ख देते है
उन्हें कर्म हम कहते हैं
द्रव्य, भाव, नो कर्म ये
तीन प्रकार के होते हैं
राग आदि हैं भाव कर्म
शरीर, पर्याप्त नो कर्म
द्रव्य कर्म हैं पूरे आठ
जग में करते ठाट-बाट
ज्ञानावरणी ज्ञान ढांक दे
दर्शनावावरणी दर्शन ढांके
वेदनीय सुख-दुख वेदन दे
मोहनीय तो मोही कर दे
आयु एक गति में रोके
नाम चित्र-विचित्र देह दे
उच्च-नीच कुल देता गोत्र
अंतराय विघ्नों का स्रोत
चार घातिया, चार अधाती
उनकी भी अब कर लो गिनती
ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी
मोहनीय, अंतराय है धाती
आयु, नाम, वेदनीय, गोत्र
कहलाते हैं कर्म अघाती
अपने शत्रु कर्म ये सारे
इनहें हरायें हम न हारें।।

8. रत्नत्रय

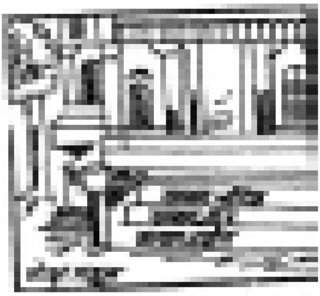

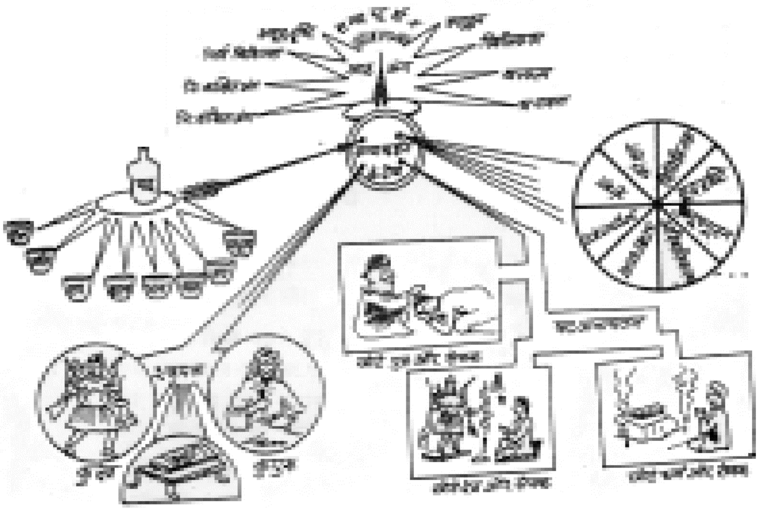

प्रश्न 1. **रत्नत्रय किसे कहते हैं?**

उत्तर : सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र को रत्नत्रय कहते हैं।

प्रश्न 2. **सम्यग्दर्शन किसे कहते हैं?**

उत्तर : सच्चे देव–शास्त्र–गुरु का तीन मूढ़ता रहित, आठ अंग सहित तथा आठ मद रहित श्रद्धान को सम्यग्दर्शन कहते हैं अथवा तत्त्वार्थ के श्रद्धान को सम्यग्दर्शन कहते हैं।

प्रश्न 3. **सच्चे देव किसे कहते हैं?**

उत्तर : जो वीतरागी, सर्वज्ञ तथा हितोपदेशी हैं, उन्हें सच्चे देव कहते हैं।

प्रश्न 4. **वीतरागी किसे कहते हैं?**

उत्तर : अठारह दोषों से जो रहित हों उन्हें वीतरागी कहते हैं।

प्रश्न 5. **अठारह दोष कौन-कौन से हैं?**

उत्तर : जन्म जरा तिरखा क्षुधा, विस्मय आरद खेद।
रोग शोक मद मोह भय, निद्रा चिंता स्वेद।।
राग द्वेष अरू मरण जुत, ये अठारह दोष।
ना हीं होत अरहन्त के सो छवि लागे मोष।।

1. जन्म 2. जरा (बुढ़ापा) 3. तृषा (प्यास) 4. क्षुधा (भूख) 5. विस्मय (आश्चर्य) 6. आरद (अरति) 7. खेद (दु:ख) 8. रोग 9. शोक 10. मद (गर्व) 11. मोह 12. भय 13. निद्रा 14. चिंता 15. स्वेद (पसीना) 16. राग 17. द्वेष 18. मरण ये अठारह दोष हैं।

प्रश्न 6. **सर्वज्ञ किसे कहते हैं?**

उत्तर : जो लोक के त्रिकालवर्ती पदार्थों को युगपत जानते हैं, उन्हें सर्वज्ञ कहते हैं।

प्रश्न 7. **हितोपदेशी किसे कहते हैं?**

उत्तर : जो प्रतिलाभ एवं राग भाव के बिना लोक के प्रत्येक प्राणियों को हितकारी (कल्याणमयी) उपदेश देते हैं, उन्हें हितोपदेशी कहते हैं।

प्रश्न 8. **सच्चा शास्त्र किसे कहते हैं?**

उत्तर : जो वीतरागी प्रभु द्वारा कथित हो मिथ्यादृष्टि जिसका खण्डन न कर सकते हों, पूर्वापरविरोध रहित हो, वस्तु के यथार्थ स्वरूप का वर्णन करने वाला हो, उसे सच्चा शास्त्र कहते हैं।

प्रश्न 9. **सच्चे गुरु किसे कहते हैं?**

उत्तर : जो विषयों की आसक्ति, आरम्भ और परिग्रह से रहित हों तथा ज्ञान-ध्यान और तप में लीन रहते हों, उन्हें सच्चे गुरु कहते हैं।

प्रश्न 10. **मूढ़ता किसे कहते हैं?**

उत्तर : मूर्खता, अंधविश्वास, रूढ़िवाद को मूढ़ता कहते हैं।

प्रश्न 11. मूढ़ता कितनी और कौन-कौन सी हैं?

उत्तर : मूढ़ता तीन हैं- लोक मूढ़ता, देव मूढ़ता, गुरु (पाखण्ड) मूढ़ता।

प्रश्न 12. लोक मूढ़ता किसे कहते हैं?

उत्तर : लोक में प्रचलित नदी, तालाब आदि में स्नान करना, रेत तथा पत्थरों का ढ़ेर लगाना, पर्वत से गिरना तथा अग्नि में जलकर सती होना इत्यादि करते हुए धर्म मानना लोक मूढ़ता है या धर्म मूढ़ता है।

प्रश्न 13. देव मूढ़ता किसे कहते हैं?

उत्तर : वरदान प्राप्ति की इच्छा से रागी-द्वेषी, मिथ्यादृष्टि-देवी देवताओं को सच्चा देव मानते हुए उनकी उपासना करना देव मूढ़ता है।

प्रश्न 14. गुरु (पाखण्ड) मूढ़ता किसे कहते हैं?

उत्तर :- संसार में भ्रमण करने वाले आरंभ-परिग्रह तथा हिंसा आदि से युक्त साधुओं को सच्चा गुरु मानते हुए आदर करना पाखण्ड मूढ़ता है। उसे गुरु मूढ़ता भी कहते हैं।

प्रश्न 15. अंग किसे कहते हैं?

उत्तर : अवयव, हिस्सा अथवा भाग को अंग कहते हैं।

प्रश्न 16. सम्यग्दर्शन के कितने अंग हैं?

उत्तर : सम्यग्दर्शन के मुख्य आठ अंग हैं-

1. निशंकित अंग 2. निकांक्षित अंग 3. निर्विचिकित्सा अंग
4. अमूढ़दृष्टि अंग 5. उपगूहन अंग 6. स्थितिकरण अंग
7. वात्सल्य अंग 8. प्रभावना अंग

प्रश्न 17. निशंकित अंग किसे कहते हैं?

उत्तर : जिनेन्द्र भगवान के वचनों में किसी भी प्रकार से शंका न करने को निशंकित अंग कहते हैं। इस अंग में अंजनचोर प्रसिद्ध हुआ।

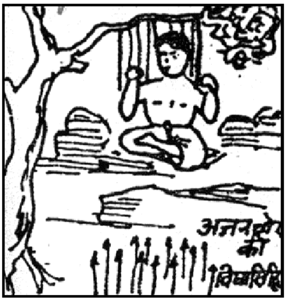

प्रश्न 18. निकांक्षित अंग किसे कहते हैं?

उत्तर : धर्म साधना करते हुए उसके फलों से

किसी भी ऐहिक भोगों की आकांक्षा नहीं करना निकांक्षित अंग है। इस अंग में अनंतमति प्रसिद्ध हुई।

प्रश्न 19. निर्विचिकित्सा अंग किसे कहते हैं?

उत्तर :- मुनिराज आदि किसी भी धर्मात्मा के प्रति किसी भी प्रकार से ग्लानि नहीं करना निर्विचिकित्सा अंग है। इस अंग में उद्दायन राजा प्रसिद्ध हुये।

प्रश्न 20. अमूढ़दृष्टि अंग किसे कहते हैं?

उत्तर :- आगम के विरूद्ध लोक में प्रचलित अंध विश्वास को नहीं मानना अमूढ़दृष्टि अंग है। इसमें रेवती रानी प्रसिद्ध हुई।

प्रश्न 21. उपगूहन अंग किसे कहते हैं?

उत्तर :- किसी भी धर्मात्माओं की प्रचलित लोक निन्दा को ढ़ाक देने को उपगूहन अंग कहते हैं। इसमें जिनेन्द्रभक्त सेठ प्रसिद्ध हुए हैं।

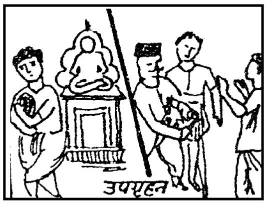

प्रश्न 22. स्थितिकरण अंग किसे कहते हैं?

उत्तर : सम्यग्दर्शन तथा सम्यक्चारित्र से गिरते हुये प्राणियों को विभिन्न उपायों से पुनः स्थिर कर देना स्थितिकरण अंग हैं। इसमें वारिषेण मुनि महाराज प्रसिद्ध हुए।

प्रश्न 23. वात्सल्य अंग किसे कहते हैं?

उत्तर : धर्मात्मा जनों को देख हार्दिकता से गाय-बछड़े वत् सस्नेह प्रसन्न होना, उनका आदर करना एवं उनके कष्टों को हर तरह से दूर करना वात्सल्य अंग है। इस अंग में विष्णुकुमार मुनि महाराज प्रसिद्ध हुए।

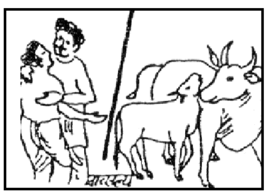

प्रश्न 24. **प्रभावना अंग किसे कहते हैं?**

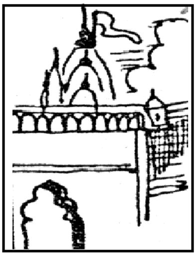

उत्तर : प्राणी मात्र में व्याप्त अज्ञान रूपी अंधकार को पूजा, तप तथा ज्ञान आदि के द्वारा हटाकर, धर्म की हार्दिक श्रद्धा जगा देना प्रभावना अंग है। इस अंग में वज्रकुमार मुनि महाराज प्रसिद्ध हुये।

प्रश्न 25. **सम्यग्दर्शन के इन आठ अंगों में कुछ हीन अंग क्या संसार छेद में कारण हो सकते हैं?**

उत्तर : नहीं हो सकते। यदि उक्त अंगों में एक भी अंग कम रहा तो शेष अंग जन्म-संतति रूप संसार का विच्छेद करने में कारण नहीं हो सकते।

प्रश्न 26. **उदाहरण पूर्वक समझाइये कि अंग हीन सम्यग्दर्शन मोक्ष प्राप्ति में कारण क्यों नहीं हैं।**

उत्तर : जिस प्रकार सर्प आदि के विष को दूर करने वाले मंत्राक्षरों में एक भी अक्षर यदि कम हो तो वह विष की वेदना को दूर करने में समर्थ नहीं होता है। उसी प्रकार एक भी अंग से हीन सम्यग्दर्शन जन्म-संतति (जन्म-मरण की परम्परा) अर्थात् संसार को अंत करने में समर्थ नहीं होता।

प्रश्न 27. **अस्मय किसे कहते हैं?**

उत्तर : अभिमान, गर्व, घमण्ड न करने को अस्मय कहते हैं।

प्रश्न 28. **मान क्या है तथा उसके कितने भेद हैं।**

उत्तर : मान एक कषाय है तथा वह सम्यग्दर्शन को मलीन करने वाला एक दोष भी है। उसके आठ भेद हैं।

प्रश्न 29. **मान के आठ भेदों को परिभाषा सहित समझाइये।**

उत्तर :- 1. **ज्ञान मान**- तुच्छ (क्षायोपशमिक) ज्ञान का अभिमान करना, उसके आगे अन्य किसी के ज्ञान को कुछ भी नहीं समझना, ज्ञान मद अथवा ज्ञान का मान है।

2. **पूजा मान**- सभी लोग हमारी प्रशंसा करते हैं,

आदर करते हैं, उच्च स्थान देते हैं इत्यादि दूसरों को कुछ भी नहीं करते इत्यादि को पूजामद या पूजा का मान कहते हैं।

3. **कुल मान**– पिता के पूर्वजों की परम्परा को कुल कहते हैं। उस कुल का अभिमान करना कि हमारे दादा या परदादा इतने अच्छे या धार्मिक थे कि, उनके समान संसार में कोई नहीं हो सकता है। इत्यादि को कुल मान कहते हैं।

4. **जाति मान**– माता के पूर्वजों की परम्परा को जाति कहते हैं। उस जाति का अभिमान करना कि मेरे नाना या नानी के समान अन्य किसी के नाना–नानी अथवा वैसी जाति की नहीं हो सकती हैं। इत्यादि जाति मद है।

5. **बल मान**– बल–शारीरिक, सैनकीय अथवा अस्त्रीय ताकत इसका अभिमान करना बल मद है।

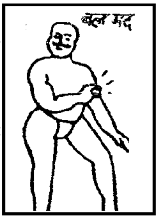

6. **ऋद्धि मान**– ऋद्धि– ऐश्वर्य! अपने ऐश्वर्य पर अभिमान करना कि मेरे पास इतने मकान, दुकान, जमीन, मोटर, ठेला या फैक्टरी आदि हैं, इतनी किसी के पास नहीं है। इत्यादि ऋद्धि मद या ऐश्वर्य मद है।

7. **तप मान**– उपवास आदि करने को तप कहते हैं। अतः उनका अभिमान करना कि मैं सात–सात या दस–दस उपवास कर लेता हूँ तुम एक भी उपवास नहीं कर पाते हो। इत्यादि तप मद (मान) है।

8. **रूप मान**– रूप–शारीरिक सौन्दर्य अर्थात् मेरे समान सुन्दर रूप अन्य किसी का नहीं

हो सकता। मेरे सामने तो सब कुरूप हैं। इत्यादि अपने सौन्दर्य का गर्व करना रूप मद है।

प्रश्न 30. **मान करते समय कैसे परिणाम होते हैं?**

उत्तर : मान करते समय अपने को सर्वश्रेष्ठ और दूसरों को नीचा दिखाने के परिणाम होते हैं।

प्रश्न 31. **सम्यग्दर्शन को पहले क्यों कहा?**

उत्तर :- क्योंकि सम्यग्दर्शन के बिना कभी भी सम्यग्ज्ञान या सम्यक्चारित्र नहीं हो सकता है। यही कारण है कि सम्यग्दर्शन को पहले कहा गया।

प्रश्न 32. **सम्यग्ज्ञान किसे कहते हैं?**

उत्तर :- सम्यग्दर्शन होने के पश्चात् न्यून (कम) अधिक एवं विपरीतता रहित जैसी वस्तु है, उसे वैसे ही जानने को सम्यग्ज्ञान कहते हैं। अथवा संशय, विपर्यय और अनध्वसाय रहित ज्ञान को सम्यग्ज्ञान कहते हैं।

प्रश्न 33. **संशय की दृष्टान्त सहित परिभाषा समझाइये?**

उत्तर :- उभय (दो) कोटि को स्पर्श करने वाले ज्ञान को संशय कहते हैं। जैसे : सीप की चमक आदि को देखकर यह सीप है या चांदी। इत्यादि द्वैत ज्ञान को संशय कहते हैं।

प्रश्न 34. **विपर्यय को दृष्टान्त सहित समझाइये?**

उत्तर :- विपरीत एक कोटी को ग्रहण करने वाले ज्ञान को विपर्यय ज्ञान कहते हैं। जैसे : सीप में चांदी का ज्ञान होना।

प्रश्न 35. **अनध्यवसाय किसे कहते हैं?**

उत्तर :- अनिर्णीत ज्ञान को अर्थात् कुछ है इस प्रकार के ज्ञान को अनध्यवसाय ज्ञान कहते हैं। जैसे : रास्ते पर चलते समय घास आदि के स्पर्श होने पर उसका निर्णय न होने को अनध्यवसाय कहते हैं।

प्रश्न 36. **सम्यक्चारित्र किसे कहते हैं?**

उत्तर :- सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान के होने पर पाँच पापों से विरक्त होना उसे सम्यक्चारित्र कहते हैं।

प्रश्न 37. **सम्यक्चारित्र के कितने भेद हैं?**

उत्तर :- सम्यक्चारित्र के मुख्य दो भेद हैं 1. देशचारित्र 2. सकलचारित्र।

प्रश्न 38. **देश चारित्र किसे कहते हैं?**

उत्तर : पापों से एक देश (सीमा पूर्वक) विरक्त होने को देशव्रत कहते हैं। देशव्रत को ही देश चारित्र कहते हैं। जो देशव्रती श्रावकों को होता है।

प्रश्न 39. **सकल चारित्र किसे कहते हैं?**

उत्तर : पापों से पूर्ण रूप से विरक्त होने को सकल चारित्र कहते हैं। यह मुनियों को होता है।

रत्नत्रय

सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र दे निर्वाण
रत्नत्रय कहलाते हैं, इनकी बात बताते हैं
देव-शास्त्र-गुरु परमश्रद्धान, सम्यग्दर्शन इसका नाम
सही-तत्व-पदार्थ का ज्ञान, सम्यग्ज्ञान इसे ही जान
पाँच पाप से हो विरक्त, यही तो है सम्यक् चारित्र
धारण इनको करना है, भवसागर से तरना है।।

❖ ❖ ❖

9. परम रत्न
सच्चे, देव-शास्त्र-गुरु

प्रश्न 1. **परम रत्न किसे कहते हैं?**

उत्तर : जो स्वयं पुनीत हो, कल्याण मार्ग पर चलता हो और दूसरों को भी उस मार्ग पर चलने की प्रेरणा करता हो उसे परम रत्न कहते हैं।

प्रश्न 2. **परम रत्न कितने हैं?**

उत्तर : संसार में तीन परम रत्न हैं-

1. सच्चे देव रत्न 2. सच्चे शास्त्र रत्न 3. सच्चे गुरु रत्न

प्रश्न 3. **सच्चे शब्द का क्या अर्थ है?**

उत्तर : सच्चे का अर्थ है यथार्थ, वास्तविक, असली, सांचा जो असली देव-शास्त्र-गुरु हैं वे ही रत्न हैं, अन्य नहीं।

प्रश्न 4. **सच्चा देव किसे कहते हैं?**

उत्तर : जो वीतरागी सर्वज्ञ तथा हितोपदेशी हैं, उन्हें सच्चा (सांचा, असली) देव कहते हैं।

प्रश्न 5. **वीतरागी किसे कहते हैं?**

उत्तर : राग-द्वेष आदि अठारह दोषों से रहित हैं तथा जिनके पास किंचित भी परिग्रह नहीं है उन्हें वीतरागी कहते हैं।

प्रश्न 6. **सर्वज्ञ किसे कहते हैं?**

उत्तर : जो तीनों लोक के त्रिकालवर्ती (भूत, भविष्यत, वर्तमान) पदार्थों को (एक साथ) जानते हैं। उन्हें सर्वज्ञ कहते हैं।

प्रश्न 7. **हितोपदेशी किसे कहते हैं?**

उत्तर : जो मोक्षमार्ग का यथार्थ एवं कल्याणकारी उपदेश देते हैं। उन्हें हितोपदेशी कहते हैं।

प्रश्न 8. **सच्चा शास्त्र किसे कहते हैं?**

उत्तर : जो अरहन्त भगवान द्वारा कथित हो, पूर्वापर विरोध से रहित हो तथा जिसमें वस्तु स्वरूप का सत्य निरूपण हो, उसे सच्चा शास्त्र या जिनवाणी कहते हैं।

प्रश्न 9. **सच्चे शास्त्रों का कथन कितने भागों में है?**

उत्तर : समस्त द्वादशांग रूप जिनवाणी (सच्चे शास्त्र) चार अनुयोगों में विभाजित है।

प्रश्न 10.**अनुयोग किसे कहते हैं?**

उत्तर : जिनेन्द्र देव की वाणी (उपदेश) का जो शाब्दिक संकलन है, जिसमें अनुक्रम से वस्तु स्वरूप का वर्णन है, उसे अनुयोग कहते हैं।

प्रश्न 11.**अनुयोग के कितने प्रकार है प्रत्येक के नाम बताओ?**

उत्तर : अनुयोग के चार प्रकार हैं-

1. प्रथमानुयोग 2. चरणानुयोग 3. करणानुयोग 4. द्रव्यानुयोग।

प्रश्न 12.**प्रथमानुयोग किसे कहते हैं?**

उत्तर : जिन शास्त्रों में तिरेसठ शलाका महापुरुषों के चरित्र का वर्णन हो उसे प्रथमानुयोग कहते हैं।

जैसे: आदिपुराण, उत्तरपुराण, पाण्डवपुराण, हरिवंशपुराण, विमलपुराण आदि।

प्रश्न 13.**चरणानुयोग किसे कहते हैं?**

उत्तर : जिन शास्त्रों में मुनि तथा श्रावकों के आचरण का वर्णन हो उसे चरणानुयोग कहते हैं। जैसे : मूलाचार, रत्नकण्डक श्रावकाचार, पुरुषार्थ सिध्युपाय, उपासकाध्ययन, वसुनंदीश्रावकाचार, पद्मनंदी-पंचविंशतिका, उमास्वामीश्रावकाचार आदि।

प्रश्न 14.**करणानुयोग किसे कहते हैं?**

उत्तर : जिन शास्त्रों में करण अर्थात परिणाम और कर्म प्रकृति, लोक आदि का वर्णन हो उसे करणानुयोग कहते हैं। जैसे :- त्रिलोय पण्णती, त्रिलोकसार, गोम्मटसार, क्षपणासार आदि।

प्रश्न 15. **द्रव्यानुयोग किसे कहते हैं?**

उत्तर : जिन शास्त्रों में नयों की प्रधानता से वस्तु के स्वभाव का तथा सात तत्त्व, छह द्रव्यों, नौ पदार्थों का कथन हो उसे द्रव्यानुयोग कहते हैं। जैसे :- द्रव्यसंग्रह, परमात्मप्रकाश, प्रवचनसार, पंचास्तिकाय, समयसार आदि।

प्रश्न 16.**सच्चा गुरु किसे कहते हैं?**

उत्तर : जो विषय-कषाय, आरम्भ-परिग्रह से रहित हों तथा ज्ञान-ध्यान, तप में लीन रहते हैं, उन्हें सच्चा गुरु कहते हैं।

प्रश्न 17.**सच्चे गुरु के कितने भेद हैं?**

उत्तर : सच्चे गुरु के तीन भेद हैं।

प्रश्न 18.**तीनों प्रकार के सच्चे गुरुओं का नाम बताओ?**

उत्तर : 1. आचार्य 2. उपाध्याय 3. साधु

प्रश्न 19.**सच्चे गुरु की क्या पहचान है?**

उत्तर :- 1. वस्त्र आभूषणों से रहित शरीर हो।
2. सिर, दाढ़ी और मूछों का केशलुंचन करते हों।
3. पिच्छि- कमण्डल रखते हों। इन तीन चिन्हों से सच्चे गुरु की बाह्य पहचान होती हैं

प्रश्न 20.**साधु (मुनिमहाराज) वस्त्र आभूषण क्यों नहीं पहनते हैं?**

उत्तर : क्योंकि इन्होंने यह अच्छी तरह जान लिया है कि हम नग्न आये हैं, नग्न ही जायेंगे, फिर बीच में इनका ग्रहण करना ही व्यर्थ है। यह समस्त सामग्री धर्म साधना में बाधक भी है।

प्रश्न 21.**केशलुंचन क्यों करते हैं?**

उत्तर : क्योंकि बाल अधिक बढ़ने पर उसमें अनेक तरह के जीव उत्पन्न हो जाते हैं, जिससे अहिंसा धर्म तथा संयम का विनाश होता है।

प्रश्न 22. **केशलुंचन कब करते हैं?**

उत्तर : उत्तम, मध्यम, जघन्य भेद से दो माह, तीन माह या चार माह के अन्दर तक नियम से केशलुंचन करते हैं।

प्रश्न 23. **मुनि महाराज केशलुंचन कैसे करते हैं?**

उत्तर : वे मुनिराज उपवास की प्रतिज्ञा लेकर सिद्ध भक्ति, योगी भक्ति पूर्वक मौन धारण करके अपने हाथों से सिर, दाढ़ी, मूछों के बाल उखाड़ फेंकते हैं। तदनन्तर प्रतिक्रमण भी करते हैं।

प्रश्न 24. **उपवास क्यों करते हैं?**

उत्तर : उपवास एक प्रकार का प्रायश्चित है, क्योंकि केशलुंचन करते समय सिर आदि स्थानों का अवलोकन नहीं होता और न वहाँ पर स्थित जीवों की पूर्णत: रक्षा ही हो सकती है। अत: जो किसी भी प्रकार के प्राणियों का विनाश हुआ हो या उन्हें कष्ट हुआ हो ऐसे पाप को दूर करने हेतु उपवास करते हैं।

प्रश्न 25. **फिर प्रतिक्रमण क्यों करते हैं?**

उत्तर : कृत दोषों को दूर करने हेतु प्रतिक्रमण करते हैं।

प्रश्न 26. **पिच्छि-कमण्डलु क्यों रखते हैं?**

उत्तर : पिच्छि और कमण्डलु ये दोनों उनके उपकरण हैं।

प्रश्न 27. **उपकरण किसे कहते हैं?**

उत्तर : जो संयम की साधना में उपकार करें उसे उपकरण कहते हैं।

प्रश्न 28. **ये किस प्रकार का उपकार करते हैं?**

उत्तर : ये संयम साधना में सहायक होते हैं, यही इनका उपकार है।

प्रश्न 29. **पिच्छि उपकरण कैसे है?**

उत्तर : क्योंकि सूक्ष्मादि जीवों की रक्षा पिच्छि से ही सम्भव है, अत: प्राणी संयम पालन में सहायक होने से यह संयमोपकरण है।

प्रश्न 30. **कमण्डलु, उपकरण कैसे है?**

उत्तर : क्योंकि! वह शौच का उपकरण है।

प्रश्न 31. **शौच किसे कहते हैं?**

उत्तर : पवित्रता नाम शौच है। कमण्डलु पवित्रता का एक साधन है। इसलिए इसे शौच उपकरण कहते हैं।

प्रश्न 32. **कमण्डलु पवित्रता का एक साधन कैसे है?**

उत्तर : क्योंकि मल-मूत्रादि त्यागने के पश्चात् शुद्धि कमण्डलु के जल से ही संभव है।

प्रश्न 33. **पिच्छि क्या जगह साफ करने के लिये नहीं रखी जाती?**

उत्तर : नहीं! क्योंकि यदि जगह साफ करने के ध्येय से इसे रखा जाये तो फिर वह पिच्छि नहीं हुई अपितु वह एक प्रकार की झाड़ू ही कही जायेगी। अत: पिच्छि का काम जगह साफ करना नहीं अपितु जीव रक्षा करना है।

प्रश्न 34. **क्या महाराज कमण्डलु का पानी पीते हैं?**

उत्तर : नहीं! वे महान साधक पुरुष होते हैं। कितनी ही प्यास की पीड़ा तथा वेदना क्यों न हो जाये तो भी वे कमण्डलु के पानी को कभी नहीं पीते। उसे मात्र शुद्धि के लिये ही रखा जाता है।

प्रश्न 35. **साधु तो ब्रह्मचर्य महाव्रत के धारी होते हैं उन्हें शुद्धि की क्या आवश्यकता?**

उत्तर : आभ्यन्तर शुद्धि के साथ बाह्य शुद्धि भी परमावश्यक है। क्योंकि मल-मूत्रादि की शुद्धि बिना शास्त्र आदि को छू नहीं सकते, अत: शुद्धि के लिये मुनि महाराज कमण्डलु रखते हैं।

प्रश्न 36. **क्या और भी उपकरण हैं?**

उत्तर : एक उपकरण उनके पास और होता है वह है शास्त्र।

प्रश्न 37. **शास्त्र क्यों रखते हैं?**

उत्तर : क्योंकि वह ज्ञान का उपकरण है।

प्रश्न 38. **अब साधु हो जाने के बाद ज्ञान की क्या आवश्यकता है?**

उत्तर : ज्ञान बिना संयम का यथार्थ पालन नहीं हो सकता तथा ज्ञान बिना भव्यों को कल्याण का मार्ग भी नहीं बताया जा सकता। अत: ज्ञान आवश्यक है और ज्ञान के लिये शास्त्र आवश्यक है।

प्रश्न 39. **उन्हें शास्त्र कौन से तथा कितने रखने चाहिये।**

उत्तर : जो शास्त्र प्राय: सभी जगह उपलब्ध नहीं हों तथा जो उनके लिये परम आवश्यक हों उन्हें ही रखना चाहिये।

प्रश्न 40. **देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति से क्या फल मिलता है?**

उत्तर : स्वर्ग, मोक्ष की सिद्धि होती है तथा विशेष सच्चे देव की भक्ति से सम्यग्दर्शन, सच्चे शास्त्र की भक्ति से सम्यग्ज्ञान तथा सच्चे गुरु की भक्ति से सम्यक्चारित्र की प्राप्ति होती है। अतः हम सभी को इन तीनों परम रत्नों की आराधना करनी चाहिये।

❖ ❖ ❖

तीन रत्नत्रय और तीन परम रत्न

(तर्ज- परररम्पम्पम)

सब चलो पाठशाला, होगा ज्ञान का उजाला,
अच्छी बात बतायें तुम्हें,
बोलो तीन-तीन-तीन, रत्नत्रय होते हैं तीन,
चलो याद करायें तुम्हें,
पहला सम्यग्दर्शन बोलो, दूसरा सम्यग्ज्ञान बोलो
तीसरा सम्यक् चारित्र है।
बोलो तीन-तीन-तीन, परम रत्न होते, तीन चलो
याद करायें तुम्हें,
पहले सच्चे देव बोलो, दूसरे सच्चे शास्त्र बोलो
तीसरे सच्चे गुरुदेव हैं।
परम रत्नों पे श्रद्धान, सम्यग्दर्शन इसका नाम
तत्वज्ञान है सम्यग्ज्ञान।
पाँचों पापों को न करना, सम्यक् चारित्र धरना
मोक्ष ये ले जाये हमें
बोलो सब-मिल बोलो, बाल विज्ञान खोलो
धर्म क्या है सिखायें तुम्हें।।

सब चलो.....।।

❖ ❖ ❖

10. भगवान नेमीनाथ

शौरीपुर नगरी में आज से (वी.नि. 2538 से) 87710 वर्ष पूर्व

22वें तीर्थंकर भगवान नेमीनाथ का जन्म यदुवंशी महाराजा समुद्र विजय के घर में हुआ था। आपकी माता का नाम शिवादेवी था। आपके शरीर का वर्ण नीला (मयूर कंठ वत्) ऊँचाई 10 धनुष तथा आयु 1000 वर्ष थी। आपके-दाहिने पैर के अंगूठे में शंख का चिन्ह था। समुद्र विजय के वसुदेव आदि दस भाई एवं कुन्ती, माद्री दो बहिनें थीं। वसुदेव के पुत्र श्रीकृष्ण हुए तथा कुन्ती, माद्री के पाँच पांडव पुत्र हुए। श्री कृष्ण भगवान नेमीनाथ जी के चचेरे भाई थे। बलदेव श्रीकृष्ण के अग्रज थे। कालान्तर में श्रीकृष्ण ने द्वारिका नगरी को (यादवों के रक्षार्थ) अपनी राजधानी बनाई।

तीर्थंकर के अतिशयों के कारण देवों ने स्वर्ग से आकर गर्भ और जन्म कल्याणक बहुत धूम-धाम से मनाया। जैसा कि सभी तीर्थंकरों के जन्मकाल पर मनाते हैं। अनेक आश्चर्यकारी अतिशय भी हुए। जिससे सभी ने आपको महान पुरुष जानकर प्रसन्नता प्रकट की। आपका बाल्यकाल 300 वर्ष तक रहा।

भगवान नेमीनाथ जी जन्म से ही तीन ज्ञान के धारक, अतुल बलधारी थे। आपका शरीर वज्रवृषभनाराचसंहनन से युक्त था। संसार के

भोगों से आप सदा उदासीन रहे, जिससे आपकी भाभियाँ तथा संगी-साथी यदा-कदा आपसे परिहास भी करते रहते थे। परन्तु भगवान ने संसार की नश्वरता को जानकर आत्म-कल्याण करना ही श्रेयस्कर समझा। वे सदैव दीक्षा लेने की भावना भाते रहते थे।

राजपाठ में अनेकों चक्र चलते रहते हैं। श्रीकृष्ण जी राजकाज सम्भालते थे। परन्तु वे नेमीकुमार की शक्ति को जानकर चिंतित भी रहते थे कि, कहीं मेरा राज-पाठ छीनकर ये राजा न बन जावें। सन्देह का कारण सही भी था।

एक बार राज दरबार में पराक्रमी पुरुषों की चर्चा चल पड़ी। सभी दरबारियों ने अपनी समझ के अनुसार योद्धाओं के बल का आकलन किया। किसी ने श्रीकृष्ण को बलशाली बताया तो किसी ने राजकुमार नेमीनाथ को। अंत में परीक्षा करने का निर्णय हुआ। नेमीकुमार ने अपनी कनिष्ठा अंगुली मोड़कर कहा कि मात्र इसे सीधा कर दें। श्रीकृष्ण ने अपनी पूरी ताकत लगा दी परन्तु वे उसे सीधा न कर सके तब वे उसी अंगुली पर झूल गये और नेमीकुमार ने परिहास करते हुए उस अंगुली को झूले की तरह झुला दिया, जिसे श्रीकृष्ण पकड़े हुए थे। इस घटना से श्रीकृष्ण को मालूम पड़ा कि नेमीकुमार अतुल बलशाली हैं। फिर तो वे सदा चिंतित रहने लगे। काफी सोच-विचार के बाद उन्होंने नेमीकुमार के विवाह करने का निश्चय किया। जिससे वे गृहस्थी के मोह-जाल में फंसकर राज-पाट के बारे में कुछ भी विचार न कर सकें। योजनानुसार श्रीकृष्ण ने वसंतोत्सव करने की घोषणा कर दी और अपनी सभी रानियों को समझा दिया। श्रीकृष्ण की रानियों ने देवर नेमीकुमार के साथ खूब होली खेली और उनसे हास-परिहास किया। जिससे उनके चित्त में विवाह करने की आकांक्षा जाग्रत हो जाय। स्नान के पश्चात् नेमीकुमार ने अपने गीले वस्त्र निचोड़ने को रानी जाम्बती से कहा। जिसे सुनकर रानी ने कहा- देवरजी मैं श्रीकृष्ण की महारानी हूँ आपकी दासी नहीं हूँ। मेरे पति महान् पराक्रमी हैं। नागशैय्या पर चढ़कर पांचजन्य शंख बजाते हैं तथा चक्र के धारी हैं। आप में ऐसी ताकत है? यह सुनकर नेमीकुमार को किंचित् रोष आ गया और वे आयुध शाला में चले गये। उन्होंने सभी अस्त्र-शस्त्रों को बिखेर दिया और नागशैय्या पर चढ़कर

पांचजन्य शंख को नाक से फूंका, जिसकी कर्कश ध्वनि सुनकर सभी घबरा गये। श्रीकृष्ण तुरंत दौड़कर आये और नेमीकुमार का रोष शांत किया। क्योंकि वह जानते थे कि नेमीकुमार तीर्थंकर हैं और इनसे पार पाना कठिन है। इनकी सेवा में तो इन्द्र भी उपस्थित रहते हैं।

कालक्रम से एक दिन श्रीकृष्ण ने सभी प्रधान पुरुषों की अनुमति लेकर नेमीकुमार का विवाह जूनागढ़ के राजा उग्रसेन की पुत्री राजुल से करने का निर्णय किया। कुछ विचार कर, रास्ते में कुछ पशुओं को एक बाड़े में बन्द करवा देते हैं, जिससे करुणावान नेमीकुमार को वैराग्य हो जावे और वे राजपाट छोड़कर दीक्षा लेकर वन को चले जावें। बारात के समय ऐसा ही हुआ। नेमीकुमार ने सारथी से पूछा- ये पशु चीख- पुकार क्यों कर रहे हैं? इन्हें क्यों बंदकर रखा है? सारथी ने कहा- हे प्रभो! ये सब आपकी बारात में आये महाराजाओं के भोजन के लिये यहाँ रोक कर रखे गये हैं। यह सुनकर नेमीकुमार को तीव्र वैराग्य हो गया स्वर्ग से लौकान्तिक देवों ने आकर भगवान के वैराग्य की प्रशंसा की तथा इन्द्रों ने भगवान को पालकी में बिठाकर सहस्त्राम् वन में गिरनार पर्वत पर ले गये। वहाँ इन्द्रों ने नेमीकुमार का दीक्षाकल्याणक मनाया। पंचमुष्टि केशलोंच कर मेघ श्रृंगवृक्ष के नीचे तेला का नियम लेकर दिगम्बर मुनि दीक्षा ग्रहण की।

राजुल ने जब सुना कि नेमीकुमार ने दीक्षा ले ली है तो पहले तो वह काफी व्यथित हुई। फिर चित्त को शांत कर उसने भी आर्यिका दीक्षा लेकर तप करने का निर्णय किया। गिरनार पर्वत पर राजुल ने दीक्षा लेकर आर्यिका के व्रत ग्रहण किये और घनघोर तप किया।

56 दिन बाद आसौज सुदी 1 (एक) को केवलज्ञान प्राप्त हुआ। महामुनि नेमीनाथ को केवलज्ञान होने पर देवों ने आकर महोत्सव किया तथा धर्मोपदेश सुनकर अपना कल्याण किया। इस समय समस्त नगर वासियों ने भगवान की पूजा कर व्रत ग्रहण किये। एक बार श्रीकृष्ण ने भगवान से पूछा कि हे प्रभो! मेरी द्वारिका नगरी का भविष्य बतावें। भगवान ने कहा कि द्वीपायन मुनि अपनी क्रोधाग्नि से इस नगरी को आज से 12 वर्ष बाद भस्म कर देंगे। आप और बलदेव सिर्फ दो ही व्यक्ति जीवित रहेंगे। कुछ समय बाद आपकी भी जरत्कुमार के बाण से मृत्यु होगी। ऐसा ही

हुआ। 12 वर्ष पश्चात् द्वारिका नगरी में यादव कुमारों ने द्वीपायन मुनि को क्रोधित कर दिया। उनकी क्रोधाग्नि से द्वारिका नगरी भस्म हो गई।

श्रीकृष्ण और बलदेव वन में पहुँचे। वहाँ श्रीकृष्ण को प्यास लगी। बलदेव श्रीकृष्ण को वन में लिटाकर जल लेने गये और इधर जरत्कुमार ने समझा कि कोई हिरण है। यह विचार कर तीर चला दिया जो श्रीकृष्ण के चरण में लगा इस प्रकार भगवान नेमीनाथ की सभी वाणी सत्य निकली।

केवलज्ञान के पश्चात् देवों ने भगवान का समोशरण बनाया। उनकी दिव्य ध्वनि द्वारा संसार का कल्याण होने लगा। आषाढ़ सुदी 7 को अपरान्ह काल में भगवान ने समस्त कर्मों को नष्ट कर गिरनार पर्वत से मोक्ष पद प्राप्त किया। राजुल ने भी स्वर्ग पद प्राप्त किया।

❖ ❖ ❖

भगवान नेमिनाथ

शौरीपुर से आने वाले, गिरनारी से जाने वाले।
समुद्र विजय, शिवादेवी के, पुत्र नेमिजी, जगत उजाले।।
हजार वर्ष की आयु पाई, सांवलिया छवि तन दर्शाई।
दस धनुष का ऊँचा तनथा, वर्ष तीन सौका बचपन था।।
राजीमती से ब्याह रचाने, जूनागढ़ लगे जब जाने।।
बंधे पशु लख जगा विराग, प्रभु चले वन, वैभव त्याग।।
राजुल ने भी दीक्षा ली, अपनी पर्याय सार्थक की।।
नेमि की बलिहारी हुई, धन्य गिरि गिरनाई हुई।।

उपसर्ग विजेता परम पूज्य गणाचार्य श्री 108 विराग सागरजी महाराज द्वारा लिखित, सम्पादित एवं संकलित तथा श्री सम्यग्ज्ञान दिगम्बर जैन विराग विद्यापीठ द्वारा प्रकाशित प्रवचन सत् साहित्य

सं.	नाम	मूल्य
1.	संस्कृत सर्वोदया टीका (वारसाणुवेक्खा) भाग 1-2	150
2.	संस्कृत रत्नत्रयवर्धिनी टीका (रयणसार) भाग 1-2	185
3.	संस्कृत श्रमणप्रबोधनी टीका (पाहुडद्वय)	
	(शोधपूर्ण साहित्य)	
4.	शुद्धोपयोग	40
5.	सम्यग्दर्शन	35
6.	आगम चक्खू साहू	25
7.	सल्लेखना से समाधि	30
8.	संत साधना के प्रेरक प्रसंग	20
9.	परम दिगम्बर जैन मुनि (हिन्दी, मराठी, कन्नड़, तमिल, अंग्रेजी)	45
10.	सर्वोदयी दिगम्बर जैन धर्म	30
11.	तीर्थंकर दिव्य दर्शन	30
12.	तीर्थंकर दर्शन	
13.	व्यसन विचार (ग्रंथ)	200
14.	फूल नहीं, हैं काँटे	
15.	संस्कार सुरभि (हिन्दी, गुजराती, मराठी)	18
16.	जिनेन्द्र दर्शन, जिनेन्द्र पूजन	10
17.	आध्यात्मिक शंका-समाधान	30
18.	आध्यात्मिक तत्त्व-चर्चा	40
	(चिंतन साहित्य)	
19.	चैतन्य चिन्तन भाग-1	15
20.	चैतन्य चिन्तन भाग-2	15
21.	चैतन्य चिन्तन भाग-3	15
	(बालोपयोगी साहित्य)	
22.	बाल विज्ञान भाग-1 (हिन्दी, इंग्लिश, मराठी, कन्नड़)	10
23.	बाल विज्ञान भाग-2 (हिन्दी, इंग्लिश)	10
24.	बाल विज्ञान भाग-3	10
25.	बाल विज्ञान भाग-4	10
26.	कर्म विज्ञान भाग-1 (हिन्दी, इंग्लिश)	10
27.	कर्म विज्ञान भाग-2	10
28.	कर्म विज्ञान भाग-3	10
	(कथा साहित्य)	
29.	नैतिक कथा मंजूषा भाग-1	30
30.	नैतिक कथा मंजूषा भाग-2	30

(अनुवाद साहित्य)

31.	वारसाणुवेक्खा		32.	परमरत्नार्चना संग्रह	20
33.	सामायिक पाठ (हिन्दी, गुजराती)10				

(पद्य साहित्य)

34.	भावों के विशुद्ध क्षण	15	35.	मुक्ताञजलि भाग-1	15
36.	मुक्ताञ्जलि भाग-2	15	37.	नव देवता निर्वाण क्षेत्र पूजा	

(संकलित/सम्पादित साहित्य)

38.	साधना से समाधि	20	39.	विमल नित्य पाठावलि	25
40.	आराधना	35	41.	सुभाषित संग्रह	40
42.	आप्त अर्चना		43.	मानतुंग की अमर भक्ति (सचित्र भक्तामर)	65
44.	साधना	10	45.	अनुप्रेक्षा	10
46.	जिनागम दीप	251	47.	सम्मेद शिखर विधान	
48.	चारित्र शुद्धि व्रत	25	49.	करुणामूर्ति सन्त	100
50.	तपस्वी सम्राट	10	51.	यज्ञोपवीत विधि	
52.	साधना के सोपान		53.	पदम् पुराण प्रश्नोत्तरी	100
54.	स्तोत्र भारती	51			

(एकांकी/नाटक साहित्य)

55.	सत्यमित्र-सत्यदृष्टि		56.	प्रद्युम्न हरण	

(पूज्य आचार्य श्री पर आधारित साहित्य)

57.	विरागाभिवंदन अभिनंदन		58.	निस्पृही संत भाग-1-2	60
59.	विराग सेतु (महाकाव्य) (हिन्दी, गुजराती, प्राकृत) भाग-1				100
60.	विराग सेतु (महाकाव्य) भाग-2				
61.	संत काव्य की परम्परा में आचार्य विरागसागर				65
62.	कमल से महाकमल				
63.	घटनायें ये जीवन की	80	64.	दिगम्बरत्व के चितेरे	150
65.	विराग सिंधु की उर्मियाँ	15	66.	विराग वाटिका	41
67.	भक्ति की झंकार	25	68.	विराग काव्यांजलि	
69.	धर्म पीयूष	30	70.	ऐसे चलो मिलेगी राह	40
71.	दूर नहीं है मंजिल	30	72.	उड़ रे पंछी	10
73.	तीर्थंकर वर्धमान	15	74.	पहले देव-पूजा फिर काम दूजा	25

75. तीर्थंकर ऐसे बनो	60	76. तट की ओर	10
77. सिर्फ दो प्रवचन	10	78. इष्टोपदेश (प्रवचन)	
79. मानतुंग की अमरभक्ति	150	80. कल्याणक महोत्सव	20
81. दान तीर्थ	20	82. धर्म के दश सोपान	20
83. जीवों पर दया करो, शुद्ध शाकाहार करो	20		
84. बुराईयाँ ही जेल, अच्छाईयाँ ही मुक्ति	10		
85. प्रवचन वर्षा	25	86. कर्तव्यमेव कर्तव्यं	25
87. श्रद्धा प्रसून	25	88. मोक्ष की राह	25
89. विरागामृत-1	30	90. विरागामृत-2	
100. समाधि तंत्र (प्रवचन)		101. समयोचित शिक्षायें भाग-1	20
102. समयोचित शिक्षायें भाग-2	20	103. समयोचित शिक्षायें भाग-3	20
104. विराग मंथन (हिन्दी, अंग्रेजी)	5	105. रजत पुष्प	51
106. कहानी सबसे सुहानी	30	107. अक्षय निधि (हिन्दी, अंग्रेजी)	10
108. संस्कार की लहरें	20	109. चलो चलें प्रभु दर्शन को	30
110. आध्यात्मिक धर्म प्रवचन	30	111. घर-घर की कहानी	30
112. वारसाणुवेक्खा प्रवचन	125	113. पर्यूषण निधि	15
114. पद्मनंदि पंचविंशतिः अधिकार 1. धर्मोपदेशामृतम्	200		
115. पद्मनंदि पंचविंशतिः अधिकार 2. दानोपदेशम्	40		
116. पद्मनंदि पंचविंशतिः अधिकार 3. अनित्य पञ्चाशत्	50		
117. पद्मनंदि पंचविंशतिः अधिकार 4-5. एकत्व सप्तति तथा यतिभावनाष्टकम्	85		
118. पद्मनंदि पंचविंशतिः अधिकार 6. उपासक संस्कार	60		
119. पद्मनंदि पंचविंशतिः अधिकार 7. देशव्रतोद्योतनम्	60		
120. पद्मनंदि पंचविंशतिः अधिकार 8-9 सिद्धस्तुति एवं आलोचना	85		
121. मेरी भावना			
122. आचार्य विराग सागर साहित्य दर्शन	10		
123. मेरी भावना प्रवचन			
124. फॉर यूथ प्रोग्रेस	22		
125. रत्नकरण्डक श्रावकाचार प्रवचन भाग-1	100		
126. सामायिक पाठ प्रवचन	85		
127. विराग संध्या	20	128. विराग अर्चना	40
129. स्वर्ग पुष्प	30	130. षट्लेश्या प्रवचन	

131. ऐसे बनायें घर को स्वर्ग
132. क्यूँ इतना अभिमान है.... 30
133. सिद्धों का खजाना 30
134. अपने नैतिक कर्त्तव्य 30
135. श्रुतज्ञानवर्धक विधान 20

Video D.V.D

1. आचार्य पदारोहण द्रोणगिरि
2. राष्ट्रीय रजत मुनि दीक्षा जयन्ती, उद्गाँव
3. उपसर्ग पर उत्कर्ष की यात्रा
4. आर्यिका विशान्तश्री माताजी, समाधि
5. व्यसन मुक्ति शाकाहार अभियान
6. लोक और मध्यलोक
7. ज्योतिर्लोक और चन्द्रयात्रा
8. जेल प्रवचन
9. स्कूल प्रवचन
10. शाकाहार रैली
11. अहिंसा रैली
12. न्यायालय में प्रवचन
13. 25 दीक्षायें- श्रवणबेलगोला
14. 11 दीक्षायें-गाँधीनगर
15. 8 दीक्षायें-गिरनारजी
16. 11 दीक्षायें-किशनगढ़
17. 26 दीक्षायें-उदयपुर
18. 25 दीक्षायें-जयपुर
19. 8 दीक्षायें-इन्दौर
20. स्वर्णिम जन्म जयन्ती
21. सिद्धांत एवं आध्यात्मिक प्रवचन (वारसाणुवेक्खा, सामायिक पाठ, तत्त्वार्थ सूत्र, पद्मनंदि पंचविंशतिका भाग-1-14)
22. मातृभक्ति
23. देश के नाम कलंक बूचड़खाने

Audio DVD

1. श्यामा के लाल
2. साधना के सरताज
3. गुरुवर का जयकारा
4. प्रवचन वर्षा (दशधर्म, सोलहकारण)
5. श्री विराग सागर नमोऽस्तु ते
6. करें गुरु भक्ति
7. चलें गुरुवर के द्वार
8. गीत गुरु के गायेंगे
9. जियो हजारों साल गुरुवर
10. मेरे मन वीणा के तारे
11. विराग स्वर्णोत्सव
12. रजतवर्ष मुनिदीक्षा का
13. आचार्य श्री विरागसागरजी महाराज पूजा
14. हे सन्मति-सन्मति दो
15. स्वर्णिम जयन्ती याद रहेगी
16. प्रथम सूरि बुंदेलखण्ड के
17. गुरु नाम की धूम मची है

साहित्य प्राप्ति स्थान

* **श्री सम्यग्ज्ञान विराग विद्यापीठ** चैत्यालय मंदिर
  बताशा बाजार, भिण्ड (म.प्र.)
  सम्पर्क सूत्र : पं. वीरेन्द्र जैन (मो. 9754803220)

* **आचार्य श्री विराग सागर विद्यापीठ (बी.एड.कॉलेज)**
  पुष्प विहार कॉलोनी, बीना-470113, जिला-सागर (म.प्र.)

* **विराग फाउण्डेशन**
  द्वारा-श्री अरुण कोटड़िया, II-A विक्रम नगर सोसायटी,
  उस्मानपुरा, अहमदाबाद-380013 (गुजरात)

* **श्री भूपेन्द्र शांतिलाल शाह**
  12-B, वर्धमान सोसायटी, डेरी रोड, मेहसाना-2 (गुजरात)
  सम्पर्क सूत्र- श्री भूपेन्द्र शाह (मो. 9898494914, 9829452020)

* **विराग महिला मंच,** बोरीवली, मुम्बई (महा.)

* **श्रीमती पुष्पा पाटनी**
  574, शांतिनगर, जैन मंदिर के सामने, गोपालपुर वायपास, जयपुर (राज.)
  मो. 09460765050

* **श्री मनीष पाटनी**
  नया बाजार, 54, धर्मकांटा के पास, अजमेर (राज.)
  मो. 09414002306

* **श्री तिलोक प्रिंटिंग प्रेस**
  विष्णु व्यास मोहता चौक, बीकानेर (राज.) मो. 9314962475

* **राष्ट्रीय विराग युवा मंच**
  अध्यक्ष – श्री राजेश जैन अंजनी नगर, इन्दौर मो. 09425316970

* **राष्ट्रीय युवा मंच अध्यक्ष – श्री पंकज पाटनी**
  72, विंध्याचल नगर, एरोड्रम रोड, इन्दौर मो. 09425476665

* **डॉ. महेन्द्र कुमार जैन 'मनुज'**
  22/2, रामगंज, जिन्सी, इन्दौर-7 मो. 09826091247